TITLE CODE : UPHIN50246

राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

लोक पहल

अध्यात्म और राजनीति के समन्वय पुरूष 'योगी आदित्यनाथ'

शाहजहाँपुर, बुधवार 07 जून 2023 | शाहजहाँपुर से प्रकाशित | वर्ष :2, अंक :15 पृष्ठ :8, मूल्य 2 रूपये

जनता की संतुष्टि ही अफसरों के प्रदर्शन का मानक होगा : मुख्यमंत्री

लोक पहल

लखनऊ। उप्र के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश की जनता की शिकायतों और समस्याओं को लेकर काफी संवेदनशील है। उन्होंने अपने अधिकारियों को साफ निर्देश दिए हैं कि जनता की समस्याओं और शिकायतों का निस्तारण ही उनके प्रदर्शन का मानक होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शासन स्तर के सभी अपर मुख्य सचिवों और प्रमुख सचिवों के साथ जनशिकायतों के निस्तारण को लेकर विभागीय कार्यप्रणाली की समीक्षा की। जनसमस्याओं और जनशिकायतों का मेरिट आधारित त्वरित समाधान पर बल देते हुए मुख्यमंत्री योगी ने लोकहित में आवश्यक दिशा–निर्देश दिए। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि शिकायतकर्ता की संतुष्टि और उसका फीडबैक ही अधिकारियों के प्रदर्शन का मानक होगा। शासन से लेकर विकास खंड तक के अधिकारी मिशन मोड में जनसुनवाई को शीर्ष प्राथमिकता देते हुए आमजन की समस्याओं का समाधान सुनिश्चित कराएं।

पीड़ित और परेशान व्यक्ति की मनोदशा को समझें, उसकी भावना का सम्मान करें और पूरी संवेदनशीलता के साथ समाधान करें। उन्होंने कहा कि अपराध और अपराधियों के खिलाफ हमने ने जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार के सभी लोककल्याणकारी प्रयासों के मूल में आम आदमी की संतुष्टि और प्रदेश की उन्नति है। शासन–प्रशासन से जुड़े सभी अधिकारियों–कार्मिकों को इसे समझना चाहिए।

आईजीआरएस और सीएम हेल्पलाइन पर आने वाले आवेदनों को लेकर थाना, तहसील और जिला स्तर हो रही कार्यवाहियों पर शासन से लगातार नजर रखी जा रही है। मुख्यमंत्री ने बैठक के दौरान निर्देश दिए कि सभी अपर मुख्य सचिव–प्रमुख सचिव फील्ड में जाएं। अगले दो माह के भीतर सभी मंडलों का भ्रमण करें। फील्ड विजिट के दौरान अपने विभाग की लोककल्याणकारी योजनाओं की समीक्षा करें।

मैंगो डिप्लोमेसी: सियासी तल्खी भूल ममता बनर्जी ने पीएम मोदी को भेजे आम

नई दिल्ली एजेंसी। ममता बनर्जी... पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और विपक्ष का ऐसा चेहरा, जो किसी भी मुद्दे पर बीजेपी और केंद्र की मोदी सरकार पर निशाना साधने से नहीं चूकतीं. अपने तीखे तेवरों के लिए जानी जाने वालीं ममता बनर्जी ने तमाम राजनीतिक मतभेदों के बावजूद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अच्छी किस्म के आम भेजे हैं। 12 साल की लंबी परंपरा का पालन करते हुए इस साल भी सीएम ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री ऑफिस में मौसमी फल भेजे हैं।

बताया जाता है कि पीएम मोदी को हिमसागर, लक्ष्मणभोग और फाजली समेत तमाम किस्मों के चार किलो आम भेजे गए हैं. ये आम एक खूबसूरत गिफ्ट बॉक्स में पैक करके भेजे गए हैं. पीएम मोदी के अलावा दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और भारत के चीफ जस्टिस डी वाई चंद्रचूड़ को भी आम भेजे गए हैं.

पीएम मोदी और ममता बनर्जी के बीच रिश्ते खट्टे–मीठे रहे हैं. 2019 में पीएम मोदी ने खुलासा किया था कि दुर्गा पूजा के मौके पर ममता बनर्जी ने उन्हें कुर्ता–पायजामा और मिठाई भेजी थी। ममता और पीएम मोदी के बीच ये मैंगो डिप्लोमेसी ऐसे समय में आई है, जब हाल ही में ओडिशा के बालासोर में हुए रेल हादसे में 288 लोगों की मौत हो गई. इस हादसे को लेकर टीएमसी और बीजेपी एक दूसरे पर हमलावर है. सीएम बनर्जी ने भी हादसे को लेकर सवाल उठाए थे।

मिशन 2024 : कांग्रेस ने शुरू की तैयारियां, यूपी की जिम्मेदारी से मुक्त हो सकती हैं प्रियंका वाड्रा

लोक पहल

नई दिल्ली। कर्नाटक और हिमाचल प्रदेश में जीत के बाद कांग्रेस ने लोकसभा के 2024 में होने वाले आम चुनावों के साथ–साथ साल के आखिर में राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ में विधानसभा चुनाव की तैयारियां शुरू कर दी है। 2024 में लोकसभा चुनाव होने वाले हैं। ऐसे में देश की सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी कांग्रेस अपने प्रमुख नेताओं को बड़ी भूमिका में उतारने की तैयारी में है। सूत्रों की मानें तो पार्टी ने हिमाचल और कर्नाटक में मिली जीत में पार्टी की नेता प्रियंका वाड्रा की भूमिका को देखते हुए कांग्रेस पार्टी महासचिव प्रियंका वाड्रा को उत्तर प्रदेश की जिम्मेदारी से मुक्त कर सकती है।

वर्तमान में, वह उत्तर प्रदेश की प्रभारी हैं, लेकिन पार्टी के थिंक टैंक का मानना है कि आगामी विधानसभा चुनावों और लोकसभा चुनावों के मद्देनजर उनकी सक्रियता केवल एक राज्य तक सीमित नहीं होनी चाहिए. पार्टी का मानना है कि जिस तरह से जनता में और खास तौर से महिलाओं में प्रियंका वाड्रा लोकप्रिय हो रही हैं उनकी सभाओं और रैलियों में महिलाओं की भारी भीड़ इकठ्ठा हो रही है ऐसे में पार्टी का यह सोचना है कि उन्हें केवल उप्र में ही सीमित न करके पूरे देश में पार्टी के प्रचार की कमान सौंपी जाये। ऐसे में कहा ये भी जा रहा है कि वो यूपी के पार्टी प्रभारी का पद छोड़ सकती हैं पार्टी प्रवक्ता प्रमोद कृष्णनन ने इसके संकेत भी दिए हैं। हालांकि, पार्टी इस बाबत कोई भी फैसला जल्दबाजी में नहीं लेना चाहती। ऐसे में पार्टी इस संबंध में अपना अंतिम निर्णय राहुल गांधी के अमेरिका दौरे से भारत लौटने के बाद ही लेगी। सभी ने देखा कि कैसे राहुल गांधी के साथ प्रियंका गांधी ने हिमाचल प्रदेश और कर्नाटक में रैलियां कीं, प्रचार किया। इन दोनों राज्यों में कांग्रेस को जीत हासिल हुई।

यूपी में आने वाले समय में प्रियंका गांधी की भूमिका इस बात पर भी निर्भर करेगी कि कांग्रेस के साथ विपक्षी दलों का गठबंधन कैसे बनता है. अगर कांग्रेस विपक्षी दलों के साथ गठबंधन में यूपी में चुनाव लड़ती है, तो प्रियंका यूपी प्रभारी की भूमिका छोड़ सकती हैं और अन्य राज्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकती हैं, लेकिन अगर पार्टी लोकसभा चुनावों में अकेले उतरती है तो चीजें अलग हो सकती हैं। अगर प्रियंका को यूपी की भूमिका से मुक्त किया जाता है, तो उनकी जगह उत्तराखंड के पूर्व सीएम हरीश रावत और कांग्रेस नेता तारिक अनवर में से किसी एक के नाम पर मुहर लगा सकती है. हरीश रावत के नाम पर कांग्रेस आगामी लोकसभा चुनावों में पहाड़ी समाज के लोगों को अपने पाले में करने की कोशिश करेगी. वहीं, दूसरी तरफ तारिक अनवर के माध्यम से पार्टी मुस्लिम वोटों को अपनी तरफ करने का दांव भी खेल सकती है।

अवैध झुग्गियों पर चलेगा योगी का बुल्डोजर

प्रदेश में अवैध झुग्गियों में रहने वाले लोगों की होगी पहचान

लोक पहल

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने अधिकारियों को राज्य भर में अवैध झुग्गियों में रहने वाले लोगों का सर्वेक्षण करने का निर्देश दिया है। सर्वेक्षण में सरकारी आवास के लिए पात्र लोगों की पहचान की जाएगी और शहरी विकास विभाग, विकास प्राधिकरण, जिला प्रशासन और पुलिस विभाग के समन्वय से किया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि वहां छिपे असामाजिक तत्वों के साथ–साथ सरकारी जमीन पर इन झुग्गियों को बनाने वाले माफिया और सरकारी कर्मचारियों की पहचान के लिए भी अभियान चलाया जाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि गरीबों की जरूरतों का फायदा उठाकर सरकारी जमीन पर अवैध बस्तियां बनाने वाले मास्टरमाइंड की संपत्ति को जब्त करने की कार्रवाई की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसे मास्टरमाइंड की संपत्तियों पर ध्यान देने के बाद ऊंची इमारतों का निर्माण किया जाना चाहिए। इस कवायद को लखनऊ में एक पायलट परियोजना के रूप में शुरू किया जाएगा।

लखनऊ में गोमती नदी के किनारे अवैध रूप से रह रहे लोगों की जानकारी विभिन्न विभागों के अधिकारियों को देने को कहा गया है। योगी आदित्यनाथ ने कहा, सर्वे जल्द से जल्द किया जाना चाहिए। जिन लोगों को पहले से ही आवास प्रदान किया गया है, लेकिन वे अभी भी अवैध कब्जे में हैं, उनकी पहचान की जाये।

उन्होंने कहा कि ऐसे व्यक्तियों की सूची तैयार की जानी चाहिए, जिनका लखनऊ या उत्तर प्रदेश से कोई संबंध नहीं है और वे अभी भी यहां अवैध रूप से रह रहे हैं. मुख्यमंत्री ने कहा कि सर्वे पूरा होने के बाद बेहतर सुविधाएं देने, बाजार और पार्क स्थापित करने और उनके बच्चों के लिए स्कूल की व्यवस्था करने के लिए ऊंची इमारतों का निर्माण किया जाएगा।

अध्यात्म और राजनीति के समन्वय पुरूष

'योगी आदित्यनाथ'

जन्मदिन पर विशेष

उत्तर प्रदेश में प्रचण्ड बहुमत के साथ लगातार दूसरी बार योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में भाजपा ने सरकार बनाई। योगी आदित्यनाथ की पहचान एक फायर ब्रांड नेता के रूप में रही है। वे पूर्वांचल के सबसे बड़े नेता माने जाते है उन्होंने लव जिहाद और धर्मांतरण जैसे मुद्दों को जोर-शोर से उठाया था। राजनीति के माहिर खिलाड़ी माने जाने वाले योगी आदित्यनाथ ने गड़वाल विश्वविद्यालय से बीएससी की डिग्री हासिल की है। गोरखपुर के गोरखनाथ मन्दिर के महंत अवैद्यनाथ ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। इसके बाद वे राजनीति में आये और 26 साल की उम्र में सांसद बनकर रिकार्ड कायम किया। 2014 में महंत अवैद्यनाथ के ब्रहमलीन हो जाने के बाद वे यहां के पीठाधीश्वर चुने गए। बताया जाता है कि गोरखपुर इलाके में योगी आदित्यनाथ की कही बातों को उनके समर्थक कानून के रूप में पालन करते हैं। पर्यावरण की दृष्टि से देश का सबसे बेहतर राज्य माने जाने वाले उत्तराखण्ड में विश्व पर्यावरण दिवस पर जन्म लेने वाले अजय सिंह विष्ट यानि योगी आदित्यनाथ ने पृथ्वी को हरा भरा बनाने और वायु प्रदूषण को कम के लिए जहां वृहद स्तर पर प्रदेष में पौधारोपण अभियान चलाया वहीं राजनीतिक और सामाजिक प्रदूषण को दूर करने के लिए भी योगी आदित्यनाथ कटिबद्ध है। प्रदेश में उनके शासन में जहां एक ओर गरीब, शोषित और वंचित को आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार मिला हैं वहीं दूसरी ओर अपराधी, गुंडे और माफिया अपनी सलामती की दुआ कर रहे हैं। योगी आदित्यनाथ कम समय में ही विश्व पटल पर एक राष्ट्रवादी जननेता की छवि बनाने में सफल हुए है।

सुयश सिन्हा

योगी आदित्यनाथ का नाम वैसे तो किसी पहचान का मोहताज नहीं है लेकिन उनका नाम तब सुर्खियों में आया जब उन्होंने 19 मार्च 2017 रविवार के दिन उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। इस वर्ष जीवन के 51 वर्ष और राजनीतिक जीवन के 26 वर्ष पूर्ण करने वाले योगी आदित्यनाथ अपने पांच वर्ष के स्वर्णिम कार्यकाल को पूरा करने के बाद 2022 में जब उत्तर प्रदेश के चुनावों की आहट हुई तो तमाम तरह के अटकलों का बाजार गर्म होने लगा लेकिन भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश के चुनावी समर में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उतरने का फैसला लिया। योगी आदित्यनाथ ने पार्टी के फैसले को सही साबित करते हुए लगातार दूसरी बार भाजपा को प्रदेश में भारी बहुमत दिलाकर यह साबित कर दिया कि प्रदेश की जनता उनके पांच वर्ष के दौरान किये गये कार्यो से खुश है।

2022 में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा और सहयोगी दलों के साथ कुल 273 सीट जीत कर एक बार फिर योगी आदित्यनाथ ने 25 मार्च 2022 को दोबारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा को कड़ी टक्कर मिलने की उम्मीद थी लेकिन योगी और इनकी पार्टी ने मिल कर विपक्ष के अरमानों पर पानी फेर दिया और यूपी के मुख्यमंत्री के रूप में फिर से शपथ ली।

योगी आदियत्नाथ के प्रारंभिक जीवन की बात करें तो योगी आदित्यनाथ का मूल नाम अजय सिंह बिष्ट है। वर्तमान में वह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री होने के साथ ही गोरखपुर के प्रसिद्ध बाबा गोरखनाथ मठ के महन्त है। योगी आदित्यनाथ का जन्म 05 जून 1972 को उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल जिले में स्थित यमकेश्वर तहसील के पंचूर गांव के एक गढ़वाली क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम आनंद सिंह बिष्ट है जो फॉरेस्ट रेंजर थे। इनकी माता सावित्री देवी एक कुशल गृहिणी हैं। इनके परिवार में इनके तीन बहनें और तीन भाई है। इनकी प्रारंभिक शिक्षा पौड़ी (उत्तराखंड) के प्राथमिक विद्यालय में हुई। प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद योगी आदित्यनाथ ने हेमवती नंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय से गणित और विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद योगी ने गणित में एमएससी की शिक्षा प्राप्त करने के लिए दाखिला लिया पर राम मंदिर में हो रहे आंदोलन के कारण इनका मन विचलित हो गया और इनका ध्यान पढ़ाई से हट गया। मात्र 22 वर्ष की उम्र में योगी ने सांसारिक जीवन को त्यागकर संन्यास आश्रम में प्रवेश किया।

योगी आदित्यनाथ का राजनीतिज्ञ जीवन : 2016 में गोरखनाथ मंदिर में एक सभा हुई जिसमें आरएसएस के सभी नेता शामिल हुए। इस सभा में यह निर्णय लिया गया कि योगी को मुख्यमंत्री बनाया जायें। इस सभा में संतो ने यह बात कही कि 1992 में जब संतो ने इकट्ठा होकर राम मंदिर बनाने का निर्णय लिया था तब ढांचा तोड़ दिया गया था। अगर सुप्रीम कोर्ट का फैसला हमारे पक्ष में भी आया तो भी मुलायम या मायावती के रहते राम मंदिर नहीं बन पायेगा। इसके लिए हमें योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री बनाना होंगा। गोरखपुर के गोरखनाथ मंदिर में लोगों की बहुत आस्था है। महंत अवैद्यनाथ ने अपना राजनीतिक उत्तराधिकारी योगी आदित्यनाथ को बनाया। 1998 में योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर से भाजपा प्रत्याशी के रूप में पहली बार चुनाव लड़ा और विजय प्राप्त की। 1998 से लेकर 2014 तक लगातार पांच बार योगी गोरखपुर से सांसद चुने गए। 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने योगी आदित्यनाथ ने जमकर प्रचार किया जिसके परिणाम स्वरूप भाजपा को प्रचण्ड बहुमत हासिल हुआ। 19 मार्च 2017 को उत्तर प्रदेश के भाजपा विधायक दल की बैठक में योगी आदित्यनाथ को विधायक दल का नेता चुना गया।

मुख्यमंत्री के रूप में योगी आदित्यनाथ की उपलब्धियां : 2017 में

पूर्वांचल एक्सप्रेसवे व बुंदेलखण्ड एक्सप्रेसवे का संचालन, गंगा एक्सप्रेस वे का निर्माण आरंभ

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बनने के बाद अपने छह वर्ष से अधिक के कार्यकाल में योगी आदित्यनाथ ने कुछ अहम फैसले लिए जिन्हें प्रदेश की जनता ने जमकर सराहा। उनके फैसलों में सबसे पहले अवैध स्लॉटर हाउस को बंद कराने, एंटी रोमियो का अभियान चलाने, छोटे किसानों का कर्जा माफ किया, उत्तर प्रदेश में माफियाओं का सफाया कराने और अपराधियों की अवैध संपत्ति को सीज करने के साथ ही लव जिहाद पर अंकुश लगाने व राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण कराने में अहम भूमिका निभाई। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के पहले कार्यकाल में करीब दो वर्ष तक उन्हें कोरोना जैसी महामारी से प्रदेश की जनता को बचाने के लिए जूझना पड़ा लेकिन उनके थ्रीटी मॉडल ट्रेसिंग, टेस्टिंग और ट्रीटमेन्ट मॉडल जमकर हिट हुआ और प्रदेश की जनता को महामारी से बचाने में कामयाब रहा। योगी आदियत्नाथ के कार्यकाल में देश विदेश के उद्यमियों के बीच उत्तर प्रदेश को लेकर एक सकारात्मक माहौल बना जिसके फलस्वरूप कोरोना काल में भी उत्तर प्रदेश में 56 हजार करोड़ रूपये से अधिक का निवेश हुआ।

योगी आदित्यनाथ के कार्यकाल में प्रदेश में बिजली का उत्पादन बढ़ने के साथ ही कटौती की समस्या से जूझ रहे प्रदेशवासियों को काफी सुविधा मिली है

70 नये राज्य मार्ग तथा 57 नये जिला मार्ग घोषित तहसील ब्लाक मुख्यालयों को 2 लेन से जोड़ने के लिए धनराशि का आवंटन

और जिला मुख्यालयों पर 20 से 22 घंटे और ग्रामीण क्षेत्रों में 16 से 18 घंटे तक बिजली आपूर्ति की जा रही है। योगी सरकार ने पर्यटन और धार्मिक स्थलों के सौन्दर्यीकरण व नवनिर्माण के लिए बेहतर कार्य किया। योगी के कार्यकाल के दौरान प्रदेश में तीन नए अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों की स्थापन का कार्य चल रहा है साथ ही

मनरेगा के अन्तर्गत 164.80 करोड़ मानव दिवस सृजित आंशिक दिव्यांगता पर 2 लाख की सहायता

कई एक्सप्रेस–वे और मैट्रो भी प्रक्रियाधीन है।

योगी ने अपने दूसरे कार्यकाल में शपथ ग्रहण करने के बाद ताबड़तोड़ फैसले लेना शुरू कर दिये है। उन्होनें सभी विभागों को विकास रोडमैप तैयार करने के निर्देश दिये है। साथ ही उन्होंने अपराधी और माफियाओं के खिलाफ जीरो टालरेंस की नीति अपनाये जाने को लेकर अधिकारियों को सख्त निर्देश दिए है। योगी ने दो सालों में प्रदेश में दस लाख करोड़ का निवेश का लक्ष्य निर्धारित किया है। अवैध और बेनामी सम्पत्तियों को जब्त करने का काम काफी गति से चल रहा है और एक बार फिर प्रदेश में बुल्डोजर जमकर गरज रहा है और प्रदेश की जनता ने उन्हें बुल्डोजर बाबा की उपाधि दे दी है।

योगी आदित्यनाथ के सन्यासी जीवन की शुरुआत

सन्यास जीवन शुरू करने के लिए योगी आदित्यनाथ ने महंत अवैद्यनाथ से मुलाकात की जिसके बाद इनका नाम अजय सिंह बिष्ट से योगी आदित्यनाथ हो गया। सन्यास जीवन ग्रहण करने के बाद योगी ने घर त्यागने, और परिवार त्यागने के बाद देशसेवा और समाज सेवा करने का संकल्प लिया। 15 फरवरी 1994 को मंहत अवैद्यनाथ ने योगी को नाथ संप्रदाय की गुरु दीक्षा दी और उन्हें अपना शिष्य बना लिया। इसके बाद अजय सिंह बिष्ट का नाम बदलकर योगी आदित्यनाथ हो गया। 12 सितंबर 2014 को महंत अवैद्यनाथ के निधन के बाद योगी आदित्यनाथ को गोरखनाथ मंदिर का महंत बनाया गया और नाथ पंथ के पारंपरिक अनुष्ठान के अनुसार मंदिर का पीठाधीश्वर बना दिया गया।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के 6 वर्ष से अधिक के कार्यकाल में विकास को प्राथमिकता देने के साथ ही दलित, शोषित और वंचितों के उत्थान के लिए भी तमाम योजनाओं को शुरू किया गया है। 15 करोड़ पात्र लोगों को निशुल्क खाद्य सामग्री का वितरण कर सरकार ने सामाजिक कल्याण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाया है। माना जा रहा है कि उत्तर प्रदेश में अन्तिम व्यक्ति के उत्थान और कल्याण के संरक्षण और संबर्द्धन के उद्देश्य से सरकार विभिन्न योजनाओं को संचालित कर एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की ओर अग्रसर है जो लोकतंत्र में राजनीति के मूल उद्देश्य को परिभाषित करने का काम करेगा।

योगी आदित्यनाथ प्रदेश के पहले ऐसे मुख्यमंत्री बने जिन्होंने लगातार दो बार इतने दिनों तक सरकार चलाई। उन्होंने माफिया और अपराधियों के खिलाफ अभियान चलाकर प्रदेश में कानून का राज कायम करने का काम किया है। योगी आदित्यनाथ ने अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और युवाओं को रोजगार देने की दिशा में सरकार ने सार्थक कदम उठाएं। योगी सरकार ने उत्तर प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए एक समग्र योजना की अवधारणा और इसके क्रियान्वयन की व्यापक रणनीति तैयार की है।

प्राकृतिक विविधता में समृद्ध है जनपद शाहजहांपुर

डा. विकास खुराना
इतिहासकार

ब्रिटिशकाल से ही जनपद शाहजहांपुर प्राकृतिक विविधता के क्षेत्र उम अग्रणी रहा हुआ है। ब्रिटिश स्रोत इसे जैव विविधता में इसे रुहेलखंड में प्रथम तथा आगरा एवं अवध के संयुक्त प्रांत में उच्च स्थान देते हैं। संभवता इसकी एक वजह इसका दो जलवायु विशिष्टता के मध्य स्थित होना है।जिला अपनी अवस्थिति में लंबाई में फैला हुआ है। उत्तरी परगनों में पहाड़ों से समीपता के कारण हिमालय जलवायु का प्रभाव मिलता है,यहां चक्रवर्ती वर्षा के उदाहरण भी अधिक है जबकि दक्षिण की ओर बढ़ते बढ़ते यह घटते जाते है,जहां से बहती गंगा और रामगंगा इसे अपनी जलवायु के प्रभाव में ले लेती है।उत्तर से दक्षिण ढाल दो डिग्री है,अनेक जल धाराएं इस भूमि को काटती है।इन सबके कारण यहां जैव विविधता अनोखी है। भारत के महा ज्यामितीय सर्वे से पहले जब तक नक्शे पर जिलों की रेखाएं नही खिंची थी यहां के उत्तरी क्षेत्र के जंगलों का विस्तार कुमायूं की पहाड़ियों तक था। इनके अधीन क्षेत्र का आंकलन सत्तर हजार हेक्टेयर किया गया था और यह विश्व के दो तिहाई बारह सिंघा के घर थे। जिलों की सीमाएं आवंटित होने के बाद शाहजहांपुर के पास मात्र तैतीस हजार एकड़ भूमि पर जंगल आया जो आज घटते घटते पांच हजार कुछ हेक्टेयर रह गया है। यह जंगल साल के जंगल हैं इनमे पांच प्रजाति के चीतल,चार सींग वाला हिरण जो अब विलुप्त हो गया है, सांभर, पाढ़ा, भालू, चित्तीदार हिरण, सेही, गिलहरी, हाथी, तेंदुआ शामिल है। उन्नीसवीं सदी के अंत तक यहां बाघों की संख्या भी अत्यधिक थीं किंतु अंग्रेजी बैरल रायफल तथा मचान का मुकाबला बाघ न कर सके और उनका बड़ी संख्या में शिकार हुआ। शाहजहांपर जिला मजिस्ट्रेट रहे एम. रिक्रट ने अकेले ही दम पर पच्चास बाघ मार गिराए थे।अभी हाल ही में हुए सर्वे में क्षेत्र की भूमि को बाघों के प्रजन्न के लिए पूरे एशिया में सर्वश्रेष्ठ बताया गया और जनपद के खुटार परागने की हरिपुरा और देवरिया रेंज की भी भूमि टाइगर रिजर्व में शामिल की गई है,अब यहां बाघों की संख्या बढ़ने की खबरे है। जब बाघ खतम हुए तो भेड़ियों का प्रभाव बढ़ गया। ब्रिटिश गजेटियर जनपद शाहजहांपुर को भेड़ियों का घर कह कर उच्चारित करता है, इनकी आमद शाहजहांपुर कैंट तक थी। दूसरी ओर जलालबाद जैसे धुर दक्षिण के परगने बनकटी के रूप में मशहूर है,यहां ऊंची घास के मैदान थे जिनमे अपेक्षाकृत छोटे जानवर खरगोश, नील गाय इत्यादि अधिक संख्या में रहे।

जनपद चार सौ प्रकार की चिड़िया का निवास है। इनमे गाड़विड, जीटा, गूंज, बर्ड शालर, व्हाइट बर्ड, फाख्ता, तोते, लव बर्ड, सारस,गौरैया इत्यादि प्रमुख है।अनेक विदेशी पक्षी भी यहां वार्षिक प्रवास पर आते है।

जनपद में उत्तर की उल से लेकर दक्षिण

की रामगंगा तक अनेक नदियां है,इनमे से खन्नौत सबसे लंबी है जबकि गर्रा मुहासिर मछली की खान के रूप में प्रसिद्ध रही है।यह नदियां अपने समृद्ध जलीय जीवन के लिए मशहूर रही थी। ब्रिटिश गजेटियर जनपद की झीलों की अत्यधिक प्रशंसा करता है,इनमे से कुछ तो दो सौ एकड़ से भी अधिक बड़ी थी,इनमे कटैया,बादशाह नगर, सिकंदरपुर पडरौना की झीलों की चर्चा अधिक है।इनके आसपास सदैव पक्षी कलरव करते देखे जाते थे।

1845 में तत्कालीन जिला मजिस्ट्रेट बेलिर ने यहां के मिलिट्री स्टेशन में कार्क और टीक के पौधे बाहर से मंगवाकर सामुदायिक वानिकी का शुभारंभ किया था। जिला अपने बागों को लेकर भी प्रसिद्ध था इनके अधीन भूमि तीस हजार एकड़ थी और पुवायां इनमे प्रथम स्थान पर था। इनमे नीम, बरगद, जामुन, अमरूद, आम, सेमल, पीपल, अनार, नींबू के वृक्ष बहुतायत में थे। जनरल एकाउंट्स आफ दी डिस्ट्रिक्ट का अध्याय पांच शाहजहांपुर शहर को ही एक बाग के रूप का बताता है।यहां वृक्षों की संख्या इतनी अधिक थी कि अगर कोई सेंट मेरी चर्च की गुम्बद पर खड़ा हो जाता तो केवल सुनहरी मस्जिद के ही गुम्बद दिखाई देते थे। कैंट स्थित सेंट मेरी चर्च की ख्याति पूरी दुनिया में अपने प्राकृतिक परिवेश के लिए भी थी जिससे कुछ ही दूरी पर खन्नौत की सूरम्मय घाटी थी।पानी दस फीट की ऊंचाई पर था और कुएं जल का स्रोत। 1874 की भू सेटलमेंट की रिपोर्ट में जीबी क्यूरी द्वारा शहर की आबोहवा को प्रांत में सर्वश्रेष्ठ और अत्यधिक स्वास्थ्य वर्धक बताया गया।

हालाकि अब प्राकृतिक संसाधनों के अविवेकपूर्ण दोहन,जंगलों की कटाई, वर्षा की कम होती मात्रा, भूमिगत जल के बड़ी मात्रा में निकाले जाने, आटोमोबाइल की बढ़ती संख्या से हालात खराब है। यहां तक कि शहर से हरियाली बिलकुल लुप्तप्राय है, हमे जनपद की प्रकृतिक विरासत की रक्षा हर हाल में करनी होगी।

देश व प्रदेश
में तेजी से बढ़ते समाचार पत्र
लोक पहल
में खबरों व विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
9935740205

आज की पत्रकारिता मिशन, प्रोफेशन और फैशन में विभाजित: सुरेश खन्ना

उपजा की प्रदेश कार्य समिति की बैठक और शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन, उपजा की स्मारिका का किया गया विमोचन

लोक पहल

शाहजहांपुर। यूपी जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन (उपजा) की प्रांतीय कार्य समिति की बैठक और शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन गांधी भवन सभागार में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना और विशिष्ट अतिथि भारतीय प्रेस परिषद सदस्य प्रजानंद चौधरी, सांसद अरूण सागर व महापौर अर्चना वर्मा ने मां सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलित कर किया। इसके उपरान्त नृत्य संस्थान के बच्चों ने सरस्वती वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि, सांसद अरुण सागर, एमएलसी डॉ.सुधीर गुप्ता उपजा के प्रदेश अध्यक्ष शिव मोहन पांडेय, प्रदेश महामंत्री अनिल अग्रवाल, दीपक अग्निहोत्री व मंचासीन अतिथियों का जिलाध्यक्ष अभिनय गुप्ता, तराना जमाल, रागिनी श्रीवास्तव, जिला महामंत्री पंकज सक्सेना, सुयश सिन्हा, जिला उपाध्यक्ष रामलडैते तिवारी, एमआई खान, राजीव मिश्रा, अमरदीप रस्तोगी, प्रदेश उपाध्यक्ष सरदार शर्मा जिला सचिव विशेक मिश्रा आदि ने माल्यार्पण कर स्वागत किया।

समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि वित्त मंत्री सुरेश कुमार खन्ना ने कहा वह पहले समझते थे कि राजनीति ही सबसे कठिन होती थी, लेकिन पत्रकारिता भी काफी दुरूह कार्य है। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में तीन तरह की पत्रकारिता की जा रही हैं। कुछ लोग इसे मिशन मानकर पत्रकारिता करते हैं तो कुछ लोग प्रोफेशनल तरीके से पत्रकारिता कर रहे हैं और कुछ लोग फैशन के तौर पर भी पत्रकारिता कर रहे हैं। पत्रकार जितना निष्पक्ष और समाज हित व जन हित में लिखेगा उतना ही उसे सम्मान और आदर मिलता है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि वित्त मंत्री ने जिला एवं प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्यों को सगंठन की ओर से संगठन के प्रति समर्पित व राष्ट्रहित एवं समाज हित में पत्रकारिता करने की शपथ दिलाई। इस मौके पर सुशील विचित्र व डा. प्रशांत अग्निहोत्री के संपादन में प्रकाशित उपजा की स्मारिका का विमोचन भी किया।

भारतीय प्रेस परिषद सदस्य प्रजानंद चौधरी ने कहा पत्रकार समाज का दर्पण होता है, उसकी जिम्मेदारी होती है कि किसी भी मामले की तह में जाकर पूर्ण रुप से जानकारी करने के बाद ही खबर लिखें। महापौर अर्चना वर्मा ने कहा पत्रकार सही गलत का बोध कराने का काम करते हैं तथा गलत कार्यों होने से रोकने का भी काम करते हैं।

मुख्य अतिथि सुरेश कुमार खन्ना को कार्यक्रम संयोजक इरफान खा व उपजा जिला अध्यक्ष अभिनय गुप्ता ने शाल ओढाकर व स्मृति चिन्ह भेंट कर आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन वरिष्ठ पत्रकार ओंकार मनीषी ने किया। इस अवसर पर एमएलसी डा. सुधीर गुप्ता, कैम्ब्रिज कान्वेंट के सह डायरेक्टर विनायक अग्रवाल, भाजपा जिलाध्यक्ष केसी मिश्रा, जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष डीपीएस राठौर, पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष वीरेंद्रपाल सिंह यादव, बरेली प्रेस क्लब के अध्यक्ष पवन सक्सेना, लखनउ प्रेस क्लब के अध्यक्ष भरत सिंह, अनिल द्विवेदी, संगठन के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष संजीव गुप्ता, पूर्व जिलाध्यक्ष आरिफ सिद्दीकी, डॉ.सुरेश मिश्रा, मुनीष आर्य, दीप श्रीवास्तव, राजीव शर्मा, अंकित जौहर, नंदलाल, प्रेमशंकर गंगवार, शिवकुमार, शिशांत शुक्ला, अमित सक्सेना, राजाराम गुप्ता, मनोज प्रबल, विकास शुक्ला, सुयश सिन्हा, कुलदीप दीपक, रमेश शंकर पांडेय, संजीव पांडेय, रोहित पाण्डेय, विमलेश पण्डित, समेत विभिन्न जनपदों से आये पत्रकार मौजूद रहे।

सम्पादकीय

भारतीय रेल हकीकत से दूर हैं दावे

एक ओर जहां प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देशवासियों को बुलेट ट्रेन का सपना दिखाया। वंदे भारत ट्रेनों का परिचालन भी शुरू किया गया लेकिन उड़ीशा के बालासोर में हुआ रेल हादसा यह बताने के लिए काफी है कि भारतीय रेल को अंतरराष्ट्रीय स्तर का बनाने का दावा चाहे कितना भी किया जाए, लेकिन यह सपना अभी हकीकत से दूर है। एक साथ तीन रेलगाड़ियों का आपस में टकराना इस बात की पुष्टि करता है कि या तो रेलगाड़ियों के परिचालन के प्रबंधन में घनघोर लापरवाही बरती गई या फिर रखरखाव और सुरक्षा के इंतजामों में व्यापक खामी है।

उड़ीसा के बालासोर में यशवंतपुर से हावड़ा जा रही दुरंतो एक्सप्रेस के कुछ डिब्बे पटरी से उतर गए और विपरीत दिशा से आ रहे कोरोमंडल एक्सप्रेस से टकरा गए। इसके बाद दूसरी रेलगाड़ी की कई बोगियां भी पटरी से उतर गई और वहीं खड़ी मालगाड़ी से टकरा गई। इस तरह एक साथ तीन रेलगाड़ियों की टक्कर हो गई और एक भयावह हादसा सामने आया जिसमें न केवल सैकड़ों लोगों की मौत हो गई बल्कि एक हजार से ऊपर लोग घायल होकर जिन्दगी और मौत के बीच जूझ रहे है। सवाल है कि जिस दौर में समूची रेल व्यवस्था को आधुनिकतम स्वरूप देने की बात की जा रही हो, उसके बारे में इस घटना के बाद क्या राय बनेगी! इस हादसे के बाद स्वाभाविक ही इस बात पर भी चर्चा हो रही है कि चलती ट्रेन को सामने से आ रही किसी ट्रेन से टकराने से रोकने के लिए जिस 'कवच' नाम की व्यवस्था के इस्तेमाल की बात हो रही थी, आखिर उस कवच प्रणाली का क्या हुआ उसने अपना काम क्यों नहीं किया, क्या उसका दायरा और उसकी उपयोगिता अभी सीमित है? हालांकि इस घटना के बारे में आई खबरों में बताया गया कि एक रेलगाड़ी के डिब्बे पटरी से उतर गए और इस वजह से हादसा हुआ।

लेकिन क्या दुर्घटना वाले मार्ग पर 'कवच' की व्यवस्था थी? इसके समांतर इस बात की पड़ताल करने की जरूरत है कि ट्रेन के बेपटरी होने का क्या कारण है। क्या पटरियों में पहले से कोई खामी थी, उससे कोई छेड़छाड़ की गई थी या फिर ट्रेन के परिचालन में कोई ऐसी चूक या लापरवाही हुई, जिसकी वजह से डिब्बे पटरी से उतरे। वजह चाहे जो हो, लेकिन सच यह है कि ट्रेन के सफर को सुरक्षित मान कर अपने–अपने घर या किसी गंतव्य के लिए चले बहुत सारे लोगों की जान चली गई या वे बुरी तरह हताहत हुए। सवाल है कि एक साथ तीन ट्रेनों के टकराने के बाद सैकड़ों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा वहीं करीब 1100 लोग घायल है। इतने बड़े हादसे के बाद क्या इस चूक के लिए किसी की जिम्मेदारी तय की जाएगी!

दरअसल, पहले हुए इसी तरह के हादसों के मद्देनजर ऐसे इंतजाम किए जाने की जरूरत महसूस की गई थी कि अगर कभी ट्रेनों में आमने–सामने टक्कर की स्थिति बने तो 'कवच' की मदद से उससे बचा जा सके। 'कवच' का पूर्व परीक्षण भी हो चुका है। लेकिन अगर ताजा रेल दुर्घटना के बारे में शुरुआती कारणों को ध्यान में रखें तो ऐसा लगता है कि बचाव के इंतजामों पर नए सिरे से विचार करने की जरूरत है। हाल के दिनों में रेलयात्रा को बेहतर करने के क्रम में इस बात पर भी ज्यादा जोर दिया जा रहा है कि रेलगाड़ियों की रफ्तार और ज्यादा बढ़ाई जाए। सवाल है कि तेज रफ्तार से चलने वाली गाड़ियों के लिए क्या रेलगाड़ियों और पटरियों की गुणवत्ता और उनके रखरखाव के साथ–साथ निर्बाध रास्ते को लेकर भी क्या उसी अनुपात में काम किए गए हैं, ताकि लोगों की रेल यात्रा को पूरी तरह सुरक्षित बनाया जा सके? बालासोर हादसे से यह साबित हो गई है कि एक ओर जहां सरकार रेल यात्रा के टिकटों की दरों को लगातार बढ़ाती जा रही है लेकिन उसी अनुपात में यात्रियों की सुरक्षा और सुविधाओं की ओर सरकार का कोई ध्यान नहीं है। सरकार को अब इस सच्चाई को समझना होगा और रेल को एक इवेंट न बनाकर यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा पर ध्यान देने की जरूरत है।

शिक्षण संस्थाओं में स्वस्थ वातावरण जरूरी

डा. कनक रानी
पूर्व प्राचार्य

विद्यालयों में बालिकाओं के प्रति शिक्षक के दुर्व्यवहार की घटनाएं मर्माहत करती हैं, हतप्रभ करती हैं। ध्यातव्य है कि विद्यालय तो ज्ञान को प्रसारित करने के पावन स्थल हैं। यहां वातावरण की पवित्रता से संदर्भित प्रतिबद्धता आवश्यक है। शिक्षण संस्थाओं का सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण ही शासनिक योजनाओं– बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ को रूपायित कर सकता है, नारी सशक्तिकरण का आधार बन सकता है। विद्यालयों में ऐसी घटनाओं के दुष्परिणाम को आंकना सहज नहीं। बालिकाओं के विद्यार्थी जीवन में प्रतिकूल प्रभाव परिलक्षित हो सकता है। अवांक्षित परिस्थितियां उनकी मनरू स्थिति को आहत कर सकती हैं, भविष्य को दुष्प्रभावित कर सकती हैं। उल्लेखनीय है कि रुग्ण, सदोष तथा अनपेक्षित आचार– व्यवहार लड़कियों के प्रति संवेदनहीनता को व्यक्त करता है, साथ ही सामाजिक क्षोभ को भी बढ़ाता है। ऐसी घटनाओं से छात्राओं– बेटियों के विद्यालय में पंजीकरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता हैं। सुरक्षा का विश्वास ही बेटियों को गतिशील बना सकता है। सोचने की बात है जब बेटियां विद्यालय में जाने से डरेंगी तो आगे कैसे बढ़ेंगी? इसमें कोई संदेह नहीं कि इस प्रकार की नकारात्मकता बालिकाओं को ही नहीं, अभिभावकों को भी उद्वेलित कर देती है। शिक्षक एक गरिमामय पद है। हमारी संस्कृति शिक्षकों के उत्कृष्ट दायित्व को निर्देशित करती रही है। यहां शिष्य–शिष्या के साथ संतानवत आचरण एवं व्यवहार विहित है। शिक्षक से सनातन संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप आचरण की अपेक्षा की जाती है। अवांछित आचरण एवं व्यवहार शिक्षक पद की गरिमा को खण्डित करता है। शिक्षक का लड़कियों के प्रति अमर्यादित आचरण अत्यंत निंदनीय है।

सम्प्रति इस समस्या के निराकरण के लिए गंम्भीरता पूर्वक विचार करना आवश्यक बन गया है। शिक्षक पद पर चयन से पूर्व उनके नैतिक चरित्र को संज्ञान में लिया जाना सामयिक आवश्यकता है। सर्वांगीण विकास, न्यायपूर्ण व्यवस्था और सशक्तिकरण के दृष्टिगत छात्राओं की सुरक्षा शीर्ष पर होनी चाहिए। अन्यथा की स्थिति में माता–पिताध अभिभावक अपनी बच्चियों को दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में

भेजने की मानसिकता को कैसे संजो पाएंगे?

बालिकाओं की सुरक्षा एक सामाजिक दायित्व है। शैक्षणिक संस्थानों में बालिकाओं के साथ अभद्र आचरण अत्यधिक चिंता का विषय है। इस संदर्भ में स्कूल प्रशासन को पूर्ण सजग होना चाहिए। बालिकाओं की समय–समय पर काउंसलिंग होनी चाहिए। उन्हें आत्मरक्षा के संदर्भ में प्रशिक्षित भी किया जाना उचित है। यदि कोई बालिका असहज दिखाई देती है तो उससे संवेदना पूर्वक बात करना समीचीन है ताकि वह आश्वस्त होकर अपनी वैयक्तिक समस्या से अवगत करा सके।

यह एक संवेदनशील विषय है जहां स्नेह, आत्मीयता, संरक्षण और मार्गदर्शन की अतीव आवश्यकता है। माता–पिता/अभिभावक–शिक्षक को ऐसी समस्याओं के निदानार्थ आगे आना चाहिए ताकि शासनिक प्रयास सफलता की ओर बढ़ सकें और बालिकाएं उन्मुक्त वातावरण में गतिशील हो सकें।

बालिकाओं की सुरक्षा के संदर्भ में तीक्ष्ण दृष्टि रखनी चाहिए। सामाजिकों की सावधानी ही बालिकाओं की शोषण से मुक्ति में प्रभावी कारक है। माता–पिताध अभिभावकों से इस दिशा में अत्यंत गम्भीरता की अपेक्षा है ताकि वे अपनी बच्चियों की मानसिक स्थिति को– समस्याओं को– तनाव को जान सकें, सुरक्षा के प्रति सचेत कर सकें और सही मार्गदर्शन कर सकें।

विद्यालयों में सकारात्मक परिवेश को प्राथमिकता दी जाए ताकि लड़कियां अपनी बात बिना किसी संकोच वा डर के समक्ष रख सकें। स्वस्थ और अनुकूल वातावरण ही उन्हें सुरक्षा का अनुभव करा सकता है, आश्वस्त कर सकता है और विश्वस्त कर सकता है। अस्तु, ऐसे अक्षम्य कृत्य भले ही न्यायिक प्रक्रिया के अधीन हों किंतु माता– पिता/अभिभावकों और शिक्षकों की सजगता ही ऐसी घटनाओं को रोक सकती है, सरकारी योजनाओं को सफल बना सकती है। जब तक समाज इस ओर संवेदनशील नहीं होगा तब तक बालिकाओं को शिक्षित और सबल बनाने की संकल्पना कदाचित ही साकार होगी।

बेरोजगारी एक बड़ी चुनौती

कृषि अर्थव्यवस्था का इकलौता क्षेत्र है, जो घाटे के बावजूद बंद नहीं होता। इस क्षेत्र को अधिक प्रोत्साहन और समर्थन दिया जाए तो भारत की बेरोजगारी की समस्या काफी हद तक सुलझ सकती है। अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी का स्थायी भाव अच्छा संकेत नहीं है। वित्त वर्ष 2022–23 के दौरान मासिक औसत बेरोजगारी दर 7.6 फीसद के उच्चस्तर पर बनी रही। लेकिन कहीं से कोई खास विमर्श का स्वर सुनाई नहीं पड़ा। ऐसा लगता है कि शायद बेरोजगारी का अहसास जाता रहा! यह मानव मन में बेरोजगारी के सहज हो जाने का संकेत है। बेरोजगारी का स्थायी भाव अस्थिरता है। यानी बेरोजगारी जितनी स्थायी होगी, अस्थिरता उतनी ही बढ़ती जाएगी। अस्थिरता क्या कुछ करती है, बताने की जरूरत नहीं। मनोभावों के बदलने से आंकड़े नहीं बदलते। अलबत्ता आंकड़े मनोभावों को बदल देते हैं। बेरोजगारी का सवाल आंकड़ों से आगे का है और मानव मन आज इसी सवाल में उलझ कर रह गया है।

भारतीय संस्कृतिः पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान

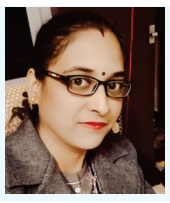

पूजा गुप्ता
मिर्जापुर, उ.प्र.

भौतिक विकास के पीछे दौड़ रही दुनिया ने आज जरा ठहरकर सांस ली तो उसे अहसास हुआ कि चमक–धमक के फेर में क्या कीमत चुकाई जा रही है। आज ऐसा कोई देश नहीं है जो पर्यावरण संकट पर मंथन नहीं कर रहा हो। भारत भी चिंतित है, लेकिन जहां दूसरे देश भौतिक चकाचौंध के लिए अपना सबकुछ लुटा चुके हैं, वहीं भारत के पास आज भी बहुत कुछ है। पश्चिम के देशों ने प्रकृति को हद से ज्यादा नुकसान पहुंचाया है। पेड़ काटकर जंगल के कांक्रीट खड़े करते समय उन्हें अंदाजा नहीं था कि इसके क्या गंभीर परिणाम होंगे? प्रकृति को नुकसान पहुंचाने से रोकने के लिए पश्चिम में मजबूत परंपराएं भी नहीं थीं। प्रकृति संरक्षण का कोई संस्कार अखण्ड भारतभूमि को छोड़कर अन्यत्र देखने में नहीं आता है, जबकि सनातन परम्पराओं में प्रकृति संरक्षण के सूत्र मौजूद हैं। हिन्दू धर्म में प्रकृति पूजन को प्रकृति संरक्षण के तौर पर मान्यता है। भारत में पेड़–पौधों, नदी–पर्वत, ग्रह–नक्षत्र, अग्नि–वायु सहित प्रकृति के विभिन्न रूपों के साथ मानवीय रिश्ते जोड़े गए हैं। पेड़ की तुलना संतान से की गई है तो नदी को मां स्वरूप माना गया है। ग्रह–नक्षत्र, पहाड़ और वायु देवरूप माने गए हैं। हमें विश्व का सबसे बड़ा तथा श्रेष्ठ लोकतंत्र होने का गौरव प्राप्त है। इसके बावजूद आज हम परिधान से लेकर खान–पान, ज्ञान से लेकर सम्मान, उत्पादन से लेकर उपभोग, और समझने से लेकर विचारने तक हर चीज में पश्चिमी तौर–तरीकों से ग्रस्त हैं। भारतीय संस्कृति पर्यावरण संरक्षण में महत्त्वपूर्ण तथा सकारात्मक भूमिका रखती है। मानव तथा प्रकृति के बीच अटूट रिश्ता कायम किया गया है, जो पूर्णतः वैज्ञानिक तथा संतुलित है। हमारे शास्त्रों में पेड़, पौधों, पुष्पों, पहाड़, झरने, पशु–पक्षियों, जंगली–जानवरों, नदियां, सरोवर, वन, मिट्टी, घाटियों यहाँ तक कि पत्थर भी पूज्य हैं और उनके प्रति स्नेह तथा सम्मान की बात कही गई है। हमारा यह चिन्तन पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त रखने के लिये सार्थक तथा संरक्षण के लिये बहुमूल्य है। की यात्रा के पीछे यह प्रावधान रखा गया कि मानव विभिन्न जगहों की भौगोलिकता, पर्यावरण का ज्ञान, मनोरंजन के स्थल, अभ्यारण्य, अरण्य, सरोवर, झीलों के शुभ दर्शन कर सकते हैं। इससे लोगों के रहन–सहन, जीवनचर्या और जीवन–यापन करने के तौर–तरीकों का बोध होता है और अनेकता

में एकता का आभास मिलता है। साथ ही मानव नैसर्गिक सौन्दर्यता से प्रभावित होता है और उसे मानसिक शान्ति की अनुभूति होती है।

हमारी संस्कृति पर्यावरण संरक्षण प्रधान रही है, जो प्रदूषण पर विराम लगाती है और आध्यात्मिक मनोविज्ञान को स्वीकार करती है और स्पष्ट करती है कि मानव के प्राणों की सुरक्षा तथा पवित्रता की सुरक्षा प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा पर निर्भर करती है। भारतीय संस्कृति के अनुसार जिस मनुष्य को आध्यात्मिक अनुभूति हो जाती है तो वह अल्प साधनों से अपने हितों की पूर्ति कर सकता है, वह हर तरह से सामाजिक तथा आर्थिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। ऊंच–नीच के भेदभाव से ऊपर उठ जाता है। आज जरूरत इस बात की है कि मानव अपनी शक्ति को देशहित में सुदृढ़ बनाए और नैतिक मूल्यों को समझे तथा नैतिक अनुशासन से नियमबद्ध हो, तभी उसकी भौतिकतावादी प्रवृत्ति पर अंकुश लग सकता है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि इस तरह के कार्य को सम्पन्न करने के लिये किसी विशेष अध्ययन तथा चिन्तन की आवश्यकता नहीं होती है। हमारी संस्कृति पर्यावरण के संरक्षण में नियमबद्ध तथा वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी का सूत्र प्रदान करती है। इसमें कहीं भी संकीर्णता, धर्मान्धता, घृणा, पृथकता आदि दुर्गुणों के लिये कोई स्थान नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि हमें निष्ठापूर्वक नैतिक अनुशासन की समस्त जन समुदाय को शिक्षा देनी चाहिए, जिससे पर्यावरण के प्रति प्रेम तथा उत्साह की भावना को प्रबल बनाया जा सके। हमारे शास्त्र किसी भी उद्देश्य को ध्यान में रखकर क्यों न रचे गए हों, एक बात स्पष्ट है कि आज यह व्यवस्था खास तौर पर पर्यावरण संरक्षण के लिये एक नयी दिशा तथा प्रदूषण से उत्पन्न चुनौतियों को जड़ से समाप्त करने में सक्षम है। पर्यावरण संरक्षण की शिक्षा बचपन से ही आरम्भ की जाए और लोगों के मन में विश्वास कायम किया जाए, जब एक अबोध बालक अपने आस–पास की नैसर्गिक सुन्दरता से अति प्रसन्न होता है, तो एक परिपक्व मस्तिष्क उसके विनाश की बात क्यों सोचता है? इसलिए हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम लोगों को ज्यादा से ज्यादा प्राकृतिक सुन्दरता का अनुसरण कराएं और इससे सम्बन्धित ज्ञान दें और उन्हें इस बात से परिचित कराएं कि हम चारों ओर से पर्यावरण के द्वारा प्रदान किये गये सुरक्षा कवच से घिरे हैं तो हमें इस कवच में सुराख करने का कभी भी नहीं सोचना चाहिए, अपितु उसे मजबूती प्रदान करनी चाहिए।

कोठी–बंगला

लघु कथा

मीरा जैन
उज्जैन

'जतिन मैं चाहता हूं तू भी अपने भैया के समान ही कोठी बना आखिर क्या कमी है अपने पास, गिने–चुने नगर के धनाढ्य लोगों में अपनी गिनती है, लोग क्या कहेंगे? मैं तेरे इस अदने से मकान में नहीं रहूंगा।' 'ओ हो बाबूजी ! आप चिंता ना करें सर्व सुविधा युक्त बनाऊंगा रहने के लिए भी पर्याप्त स्थान होगा।' पास–पास बने दोनों भाइयों के मकानों का गृहप्रवेश एक साथ हुआ, हर आगंतुक रोहन के कोठी की भूरी–भूरी प्रशंसा करते नहीं थक रहा था वहीं जतिन को साधारण सी बधाई, कुछ करीबी मजाक में ही सही उलाहना दे गये –'जतिन भाई ! पैसों की क्या कमी थी, तुम भी रोहन की तरह कोठी बना लेते तो मजा आ जाता, शानदार दो कोठी एक साथ देख शहरवासी दांतो तले उंगली दबा लेते।'

आज 5 वर्ष बाद सभी रिश्तेदार यहां तक मां–बाबूजी भी जतिन के घर पर ही रहना ज्यादा पसंद करते , संध्या के वक्त तो रोहन का परिवार भी जतिन के यहां ही होता , दिल ही दिल में रोहन को यह बात हमेशा कचोटती कि–'काश ! मैंने भी आधे ही भूखंड पर मकान बनाया होता तो आज मैं अपने घर पर ही इतनी खूबसूरत हरियाली और फूल पौधों का आनंद ले रहा होता , कोठी का आधे से ज्यादा हिस्सा साल भर ही लगभग बंद ही पड़ा रहता है।'

गांव की हरियाली!

रानी प्रियंका
बहादुरगढ़ हरियाणा

मोली और सौरभ अरसे बाद गांव से गुजर रहे थे। उनकी नजर रास्ते के तालाब पर गई। बचपन मे वे यहां अक्सर आया करते थे। तालाब की सूरत देख मोली ने पूछा, 'सौरभ, इस तालाब के पानी कहाँ गये। देखो न यह कितना उजड़ा–उजड़ा लग रहा है। याद है तुम्हे, जब हम यहां आया करते थे तो यह जगह कितना मनोरम था। पेड़–पौधे, हरियाली, चिड़ियों की कलरव से तर रहता था। गर्मियों के दिन में यह गांव के हमलोगों के लिए सबसे रमणीय जगह था।' 'हाँ मोली, यह वही जगह हैं। अब सब बदल चुका है। शहर बनने की ललक गांव को निगलती जा रही है। अब तो किस्से–कहानियों मे सिमटते जा रहे गांव।'

सौरभ की बात सुन दुखी मोली ने कहा, 'अब हमे जहां कहीं खाली जगह दिखे तो वहाँ पेड़ लगा देना चाहिए।' 'बिल्कुल। लोगो को भी कोरोना की याद दिलानी चाहिए। उस समय ऑक्सीजन के लिए कितनी भयावह स्थिति हो गई थी। 'सही सौरभ। गांव वालों को पेड़ लगाओ, पेड़ बचाओ' के लिए जागरूक करना होगा। प्रकृति को नुकसान पहुँचाने वाले पर नजर रखनी होगी। अपने गांव को कंक्रीटी शहरीकरण से बचाना होगा। तब ही गांव की हरियाली बच पाएगी। अब हर छुट्टी में हम यहां आकर इस काम को आगे बढायेंगे।'

गज़ल

हमको जो भी उजाले मिले,
तम के घर पलने वाले मिले।

साथ तो राजपथ ने दिया,
किन्तु पाँवों को छाले मिले।

प्यास पीने को मिलती रही,
भूख ही के निवाले मिले।

जिनको करनी थी सबकी सँभाल,
अपना घर वे सँभाले मिले।

'इंडिया, दैट्स भारत' लिखा,
कैसे अंगरेज काले मिले !

बात कहनी थी जब न्याय की,
सत्य के मुँह पे ताले मिले।

राजेन्द्र वर्मा, लखनऊ

पर्यावरण

हे मानव! अगर खुद को आधुनिक
विकसित शिक्षित मानते हो।
तो मुझे काटकर हर कुल्हाड़ी का
वार अपने पैरों पर क्यों मारते हो।
खुद को ही अपाहिज बना कर,
तुम क्या हासिल करते हो।

हरे–भरे जंगलों को नष्ट कर,
चह चहाते पक्षियों का घोंसला उजाड़ कर।
अपनी अट्टालिका बनाते हो।
अपनी हर सांसों में विष
घोलकर,
किस दिवास्वप्न में जीते हो।

प्रगतिशीलता के नाम पर
क्यों बेलगाम हो जाते हो।
हवाओं का तुम रंग बदलते,
नदियों को भी तुम नहीं बक्शते।
अपनी ही जीवन नैया में सेंध लगाकर।
मृत्यु को तुम क्यों न्यौता देते।

पर्यावरण को नष्ट कर,
अपना ही भविष्य अंधकारमय करोगे।
क्या दोगे विरासत में,
अपने नौनिहालों को,
क्या विषधर बनकर ?
अपने ही हाथों से उनको विष पिलाओगे।

बंजर भूमि, अशुद्ध वायु, दूषित
नदियों पर अब रहम करो।
कितना करोगे इनका दोहन,
अब तो गहन विचार करो।
आधुनिकता के नाम पर,
कब तक अपना ही सर कलम करोगे।
जीवनदायिनी रक्षा कवच है ये।
ये कब तुम समझ पाओगे।

ग्लोबल वार्मिंग, सुनामी,
भू स्खलन है इनकी चेतावनी।
इनकी विनाश लीला देखकर।
अब तो आंखें खोलो।
जिस परिवेश में तुम रहते हो।
उसमें जीवन रस घोलो।
पर्यावरण की रक्षा कर,
मानवता से नाता जोड़ो।

राजश्री सिन्हा
सोफिया (बुल्गारिया)

दो हजारी की करुण कथा

हास्य व्यंग

रेखा शाह आरबी
बलिया

सभी हैरान थे भोचक्के थे ऐसा क्या हुआ? ऐसा क्यों हुआ? अचानक से उसके मरने की खबर जो लोगों को मिली थी। अभी तो उसकी उम्र नहीं थी मरने की। मात्र सात बरस की अल्पायु भी कोई जीवन यात्रा होती है। अभी तो उसके खेलने खाने के दिन थे अपने कुनबे संग हंसने मुस्कुराने के दिन थे। लेकिन हाय रे निर्दई.. दुनिया हाय रे निर्दई विधना... जाने कौन सा उसे रोग लगा की इतनी कम आयु में एकदम से मृत्यु की खबर मिली। लोग संभल भी न पाए क्योंकि वह आमतौर पर अन्य अपने बंधु बांधव जितना आम नहीं था यदा–कदा कभी–कभी दिख जाता था कुछ लोगों ने देखा भी नहीं था आज तक.. छूने की तो बात ही बहुत दूर है। लेकिन बाद में पता चला वह अपनी मौत नहीं मरा था उसे सजा–ए–मौत का हुक्म सुना दिया गया था दिन महीना वार तारीख भी मुकर्रर कर दी गई थी। जब उसका जन्म हुआ था उस के उपलक्ष में खूब सोहर बधाइयां हर्षोल्लास से गाए गए थे.. हमरा बुझाता बबुआ डीएम होईहे हमरा बुझाता बबुआ सीएम होईहे हो। अला अला फला फला और भी ना जाने क्या–क्या गाया गया था लेकिन बेचारा..

सांसे ना खरीद सका दुनिया के बाजार में! मारा गया एक मासूम बेइंतहा ऐतबार में!!

मरते–मरते उसके जुबान और आंखों में बस एक ही सवाल था मैंने किसी का

बुरा नहीं किया मैंने कभी किसी का बुरा चाहा नहीं मैं बुरा नहीं था। मैं तो नारी शक्ति का पसंदीदा रंग और बड़े–बड़े लोगों अमीरों को बहुत पसंद था। लेकिन कभी मैंने किसी का चुनाव नहीं किया जिसने जितना प्यार दिया उतना मैं उसका होकर रहा फिर मुझे क्यों मारा गया। मारना था तो किसी और का चुनाव किया गया होता मेरे पीछे तो एक लंबी चौड़ी लाइन लगी थी मैं तो जहां पर रहता था चुपचाप पड़ा रहता था ना इधर ना उधर डोलता था ना ही शोर मचाता था। बलि ही लेनी थी तो किसी और की बलि ली जा सकती थी मुझ मासूम ने हीं किसी का क्या बिगाड़ा था क्यों क्यों क्यों?? लेकिन सारे जवाब नदारद थे जिंदगी भर जो सब के कलेजे से चिपक कर दुलार पाता रहा जिन्होंने अपनी तिजोरी में उसे अपनी जान की तरह महफूज और बंद रखे उन्होंने भी पलट कर मेरी एक बार खोज खबर नहीं ली। सबसे एक समान व्यवहार करने के बावजूद किसी ने भी संकट के समय एक शब्द नहीं निकाला जाने कौन सी उन लोगों की मजबूरी थी जो उनके कंठ अवरूद्ध हो गए थे और वह कुछ बोल ना सके। विदा ले रहा हूं लेकिन फिर वापस आने की उम्मीद के साथ।

एक आयुध था सुदर्शन चक्र

सुशील दीक्षित 'विचित्र'
शाहजहाँपुर

पौराणिक हथियारों में तीन शस्त्र बहुत प्रसिद्ध हैं। एक सुदर्शन चक्र, दूसरा पिनाक और तीसरा गांडीव। वैसे तो कहा जाता है कि लगभग सभी देवताओं के पास अपने अपने सशत्र थे लेकिन वे सब सुदर्शन चक्र ही थे इसमें संदेह है। इन सबके बीच तीन ऐसे चक्र का पता चलता है जो सुदर्शन चक्र की श्रेणी के थे। एक चक्र शंकर जी के पास था जिसका नाम भवरेंदु था। विष्णु जी के चक्र का नाम कांता चक्र, दुर्गा देवी के चक्र का नाम मृत्युमंजरी था। एक चक्र श्रीकृष्ण के पास था। यह सुदर्शन चक्र कहलाता था। इन सभी चक्रों का निर्माण शंकर जी ने किया था। पुराण व अन्य ऐसी ऐतिहासिक पुस्तकें खंगाली जायें तो यह निष्कर्ष निकालने में किसी को कठिनाई नहीं होगी कि शंकर जी महान वैज्ञानिक भी थे। कैलाश पर्वत की शांतमय वादियों में अनुसंधान करते रहते और नवीन शस्त्रों, औषधियों समेत विभिन्न विद्याओं का निर्माण करते रहते थे। शंकर जी ने विभिन्न शस्त्र बनाने की ट्रेनिंग पहले रावण और फिर रावण के अनुरोध पर मेघनाद को दी थी अलबत्ता यह किस्सा फिर किसी दिन आप को सुनाऊंगा। अभी तो दास्तान ए सुदर्शन चक्र सुनिए। सुदर्शन चक्र की जरूरत तब पडी जब देवता अपने सौतेले भाई असुरों से बार बार प्रताड़ित हुए। तब विष्णु जी ने शंकर जी से प्रार्थना की कि कोई खास शस्त्र का निर्माण करें। विष्णु पुराण में इसकी कथा यूँ आई है कि असुरों के विनाश के लिए विष्णु भगवान ने गढ़वाल के श्रीनगर स्थित कमलेश्वर शिवालय में शंकर जी की तपस्या की। वे रोज एक सहस्त्र कमल पुष्प उन पर चढ़ाते थे। एक दिन एक फूल कम पड़ गया तो उन्होंने अपनी आँख चढ़ा दी। इससे प्रसन्न हो का शंकर जी ने सुदर्शन चक्र विष्णु जी को दिया। मेरा व्यक्तिगत निष्कर्ष यह है कि विष्णु जी के कहने पर शंकर जी ने इसी स्थान पर लम्बी रिसर्च के बाद दो चक्रों की रचना की। एक अपने लिए और दूसरा विष्णु भगवान के लिए। आगे चल कर विष्णु जी ने यह चक्र दुर्गा देवी को दे दिया जिससे उन्होंने दुर्ग नाम के असुर का वध किया जिसके कारण उनका नाम दुर्गा पड़ा। इसी से उन्होंने महिसासुर को मारा। सदियों बाद यह चक्र तब दिखाई पड़ा जब श्री कृष्ण ने शिशुपाल को मारा। श्री कृष्ण के पास चक्र कहाँ से आया इसके बारे में तीन बाते कही जाती है। पहली यह कि इन्हें सुदर्शन चक्र दुर्गा देवी जी ने दिया, दुसरी यह कि इन्हें चक्र परशुराम से प्राप्त हुआ और तीसरी बात यह कि गुरू संदीपन ने चक्र दिया। जहाँ तक मैंने समझा है कंस के वध के समय उनके पास चक्र नहीं था और मथुरा छोड़ते समय भी चक्र नहीं था। सुदर्शन चक्र की संरचना का भी अलग अलग वर्णन मिलता है। शिव पुराण के अनुसार उसमें हजार आरे थे। हरिवंश पुराण के अनुसार इसमें 108 आरे थे। विष्णु पुराण में चक्र का जो वर्णन आया है वह अधिक एथेंटिक माना जाता है। कथा के अनुआर शंकर जी ने विष्णु जी को चक्र प्रदान करते हुए कहा कि हे नारायण, सुदर्शन नाम का यह आयुध 12 आरो , 6 नाभियों, दो युगों से युक्त है। आरों में बारह आदित्य, नाभिओं में 6 ऋतुओ का वास है। यह चांदी की शलाकाओं से निर्मित था। इसकी ऊपरी और निचली सतहों पर लौह शूल लगे हुए थे। इसके साथ ही इसमें अत्यंत विषैले किस्म के विष, जिसे द्विमुखी पैनी छुरियों मे रखा जाता था, का भी उपयोग किया गया था। अलबत्ता इसे अंगुली से चलाना संभव नहीं था क्योंकि आज के अनुसार इनका वजन लगभग 30 किलो होता था। इसे चलाने की विशेष टेक्नीक होती थी जो महादेव से विष्णु, विष्णु से दुर्गा जी को उनसे परशुराम या संदीपन को और यहां से श्रीकृष्ण को चक्र हस्तांतरित होता रहा। कृष्ण जी ने उसे चलाने की तकनीक संदीपन या परशुराम से सीखी। बाद में कृष्ण जी ने चक्र को नष्ट कर दिया ताकि वह किसी गलत हाथ में न पड़ जाए।

पर्यावरण गीत

आँकड़ों के खेल से बाहर निकलकर के,
आइए कुछ काम करते हैं हकीकत में।

फाइलों में लग रहे हैं पेड़ बरसों से,
और फोटो छप रहा अखबार में चोखा।
चाहते हैं मेघ बरसें सींच दें धरती,
अब नहीं संभव, प्रकृति के साथ है धोखा।

जो लगाए पेड़ उनकी हो सुरक्षा भी,
दुर्दशा होने न दें अब किसी कीमत में।

फूलए पत्ती, नारियल की भेंट देकर हम,
चाहते आशीष वृक्षों और नदियों से।
कारखानों का जहर उनको पिलाकर के,
कर उन्हें दूषित किया है पाप सदियों से।

छेड़कर अभियान नदियों की सफाई हो,
काम आतीं ये हमारी हर जरुरत में।

पर्वतों को काटकर निर्माण भवनों का,
है कहाँ तक उचित इस पर सोचना होगा।
वायु प्राणों को हमारे दे रही है जो,
प्रकृति का दोहन हमें मिल रोकना होगा।

प्रकृति का शोषण बहुत भारी पड़ेगा अब,
दे रही चेतावनी वो कई सूरत में।

ज्ञानेन्द्र मोहन 'ज्ञान'

क्षणिका

पहले आती थी हाल-ए-दिल पे हंसी,
अब तो हर बात पर हंसी आती!
साली का इक अलग अट्रैक्शन है,
बीवी खुर्राट है नहीं भाती !

दिनेश रस्तोगी
शाहजहाँपुर

जल संरक्षण से ज्यादा उसकी शुद्धता चुनौतीपूर्ण

डा. स्वप्निल यादव
शाहजहांपुर

भारतीय उच्चतम न्यायालय अनुच्छेद 21 के अंतर्गत भारतीय जनता को गरिमा के साथ जीवित रहने का अधिकार दिलाता है। जीवन को अधिक सार्थक और रहने योग्य बनाने के लिए अनुच्छेद 21 में जल के अधिकार को जोड़ा गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ के जल मानवाधिकार विषय पर 2002 में जारी आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक समिति ने अपने जनरल कमेंट संख्या 15 में साफ लिखा है कि जल का मानवाधिकार प्रत्येक व्यक्ति को उसके निजी और घरेलू उपयोग हेतु पर्याप्त सुरक्षित स्वीकार्यता, भौतिक रूप से और कम कीमत पर उपलब्ध पानी का अधिकार प्रदान करता है। डिहाइड्रेशन से होने वाली मृत्यु को रोकने के लिए रोगों के खतरे को कम करने और उपभोग, खाना पकाने, निजी और घरेलू स्वच्छता की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सुरक्षित जल की उपयुक्त मात्रा प्रदान करना अत्यंत आवश्यक है। यदि संयुक्त राष्ट्र संघ के जनरल कमेंट संख्या 15 को हम ध्यान से देखें तो वह कहता है कि मानव के अस्तित्व के लिए जल एक मौलिक शर्त है और इसका होना समुचित जीवन स्तर के लिए अपरिहार्य है। जल पर्याप्त मात्रा में उपस्थित होना चाहिए। अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार यह मात्रा लगभग 50 लीटर प्रतिदिन की है और किसी भी हालत में 20 लीटर प्रतिदिन न्यूनतम से नीचे नहीं होनी चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के उपयोग के लिए जल समुचित होना चाहिए और उसकी गुणवत्ता भी सुनिश्चित होनी चाहिए। पेयजल रंगहीन और गंधहीन हो और स्वाद के हिसाब से स्वीकार्य होना चाहिए। पानी की उपलब्धता प्रत्येक व्यक्ति तक होना चाहिए और अगर नहीं है तो लोगों की सहज पहुंच में होना तो चाहिए ही अर्थात घर के अंदर या फिर घर के आस–पास उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। जल के मानवाधिकार में स्वच्छता या अधिकार ही नहीं थे राज्यों और सरकारों का यह दायित्व है कि पानी विशेषकर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में सुरक्षित महिलाओं और उनके बच्चों की जरूरतों को ध्यान में रखकर प्रदान किया जाना चाहिए। विश्व स्वास्थ संगठन का मानना है विश्व में लगभग 80: बीमारियां अशुद्ध जल के कारण होती हैं। भारत के लगभग 600 जिलों में से एक तिहाई जिलों में भूजल पीने के योग्य नहीं है। इस दूषित जल में फ्लोराइड, आयरन, नमक और आरसेनिक खतरनाक स्तर पर उपलब्ध है। रिपोर्ट में कहा गया है कि आयरन पानी में पाया जाने वाला प्रमुख संदूषक है, जिससे 18,000 से अधिक ग्रामीण बस्तियां प्रभावित हैं। इसके बाद खारापन (लवणता) है, जिससे लगभग 13,000 ग्रामीण बस्तियां के लोग प्रभावित हैं। वहीं, आर्सेनिक (12,000 बस्तियां), फ्लोराइड (लगभग 8000 बस्तियां) और अन्य भारी धातुओं से भी कई ग्रामीण बस्तियों के लोग प्रभावित हैं। लगभग 65 मिलियन लोग फ्लोरोसिस से पीड़ित है जो अतिरिक्त फ्लोराइड के कारण होने वाली एक बीमारी है जो विकलांगता को बढ़ाती है, यह बीमारी अधिकतर राजस्थान राज्य में देखी गई है। भारत की 70 प्रतिशत जलापूर्ति को प्रदूषित बताया गया है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने भारत की जल की गुणवत्ता को 122 देशों में से 120 में स्थान पर रखा है। यदि हम देखें तो

दूषित जल से प्रोटोजोआ और वायरस जनित रोगों के साथ–साथ बैक्टीरिया से होने वाले रोग भी पनपते हैं। इनमें हेपिटाइटिस ए, डायरिया, दस्त, पेचिश, पोलियो और मेनिनजाइटिस, ट्रेकोमा आदि गंभीर बीमारियां भी शामिल हैं। पीने योग्य जल के हालात भारत में इतने खराब हो चुके हैं कि देखा जाए तो चेन्नई में पानी बिल्कुल खत्म हो चुका है उसके बाद आशंका जताई जा रही है कि अब दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और हैदराबाद की बारी है। नीति आयोग ने भी कहा है कि अगर आज चेन्नई जीरो ग्राउंड लेवल पानी की हालत से गुजर रहा है तो एक–दो सालों में ही बेंगलुरु और मुंबई के यही हालात होने वाले हैं। इसके बाद दो–तीन सालों ठीक यही हालत दिल्ली और हैदराबाद समेत देश के कई बड़े शहरों की होने वाली है। पूरा देश अब पानी के लिहाज से ऐसे मुहाने पर बैठा है जो खतरे की घंटी है। कम से कम आधे देश में अगले एक दशक या उससे पहले ही पानी के ना होने की खतरे की घंटी बजने लगेगी। देखा जाए तो चेन्नई देश का छठा बड़ा शहर है, चेन्नई में एक पानी का टैंकर 6000 से ज्यादा में बिक गया। आबादी में हम चीन को पीछे थोड़ी चुके हैं जबकि यह उम्मीद हमें 2027 तक थी । इसके साथ ही अब जो पानी के साथ ज्वलंत समस्या उभर रही है वह है माइक्रोप्लास्टिक की। जर्नल ऑफ हजार्डस मटेरियल्स में प्रकाशित यूनिवर्सिटी ऑफ हेल की रिसर्च के अनुसार, अधिक मात्रा में माइक्रोप्लास्टिक का सेवन करने से हमारी कोशिका को नुकसान पहुंचता है, जिससे भविष्य में कई घातक बीमारियां होने का खतरा बढ़ जाता है। कोशिका को नुकसान पहुंचने की वजह से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो सकती है। साथ ही, इससे न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर, थाइराइड और कैंसर जैसी बीमारियां होने की संभावना भी है। सी साल्ट, रॉक साल्ट, लेक साल्ट और वेल साल्ट जैसे नमक में भी माइक्रोप्लास्टिक होता है। हालांकि, इनमें प्लास्टिक के कणों की मात्रा कितनी होती है, ये उसके स्रोत पर निर्भर करता है। नल और बोतल दोनों के ही पानी में माइक्रोप्लास्टिक होता है। हम जितना प्रदूषित पानी पीते हैं, हमारे शरीर में उतना ज्यादा माइक्रोप्लास्टिक जाता है।लेकिन यह केवल अभी खतरे की घंटी है। ऐसा नहीं है कि हम बहुत कुछ पीछे छोड़ चुके हैं। पेयजल को संक्रमण से बचाने का सबसे सुलभ निजी तरीका है कि आप स्वयं को उसे विषाणु व बैक्टीरिया रहित बनायें। इसके लिए फिल्टर का उपयोग बहुत जरूरी हो जाता है। 10 से 15 मिनट तक पानी उबालकर ठंडा करने के बाद पीना भी उपयोगी रहता है। पानी साफ करने हेतु रसायनिक उपाय भी है–जैसे कि ब्लीचिंग पाउडर, एचटीएफ क्लोरीन टैबलेट या आयोडीन का थोड़े–थोड़े दिन बाद नियमित इस्तेमाल करना। सरकार के साथ–साथ प्रत्येक व्यक्ति को पानी की समस्या को एक आंदोलन की तरह अपने जीवन में उतारना पड़ेगा। सरकार और देशवासियों को अपने अपने स्तर पर इस समस्या से लड़ना पड़ेगा। यदि हम ध्यान दें तो सामान्य 4 सदस्य परिवार प्रतिदिन 450 लीटर पानी का उपयोग करता है। यदि हम इस आंकड़े को ध्यान में रखें इसी सीमा के अंदर पानी का उपयोग करें तो हम लगभग आधी जंग जीत लेंगे। उसके अलावा जल संरक्षण को पाठ्यक्रम का भाग भी बनाया जाना चाहिए तथा सामाजिक संगठनों को भी प्रत्येक विद्यालय में जाकर बच्चों को आम नागरिकों को जल संरक्षण के प्रति जागरूक बनाना चाहिए।

प्लास्टिक एक पर्यावरणीय समस्या

पर्यावरण दिवस पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन

लोक पहल

शाहजहाँपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एसएस कालेज के शिक्षक शिक्षा विभाग की ओर से एक अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि के तौर पर वनस्पति विज्ञान विभागाध्यक्ष, डॉ आदर्श पाण्डेय ने कहा कि "प्लास्टिक एक पर्यावरणीय समस्या बन गया है। इसका उपयोग हमारे प्रदूषण को बढ़ाता है। जंगलों, नदियों, समुद्रों और जलवायु के प्रभाव को प्रभावित करता है और वनस्पतियों और जन्तुओं के लिए मारक प्रभाव डालता है। इस अवसर पर डॉ आदर्श पाण्डेय को हाल ही में 'स्मार्ट नैनो बैंडेज' नामक पेटेंट पब्लिकैशन हेतु शाल उढ़ा कर सम्मानित किया गया।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के सचिव डॉ अवनीश मिश्र, प्राचार्य प्रो (डॉ) राकेश कुमार आजाद, डॉ प्रभात शुक्ल तथा मुख्य अतिथि डॉ आदर्श पाण्डेय ने माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर किया। डॉ प्रभात शुक्ल ने कहा की पर्यावरण संरक्षण की संकल्पना संविधान मे भी निहित है अतः इसको संरक्षित करना हम सभी का कर्तव्य है। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ राकेश आजाद ने एनवायरनमेंट अवेर्नेस नामक अपनी पुस्तक का जिक्र करते हुए कहा इस इस पुस्तक मे पर्यावरण प्रदूषण एवं उससे बचाव का वर्णन किया गया है।

इस अवसर पर डॉ अवनीश कुमार मिश्र ने कहा कि डॉ आदर्श पाण्डेय द्वारा पेटेंट पब्लिकेशन के इस उपलब्धि ने महाविद्यालय का नाम विश्वपटल पर चमकाया है। उन्होंने कहा कि ऐसी उपलब्धियां महाविद्यालय के सतत विकास हेतु अति आवश्यक है। कार्यक्रम में डॉ मनोज मिश्र, डॉ शैलजा मिश्रा, रोहित सिंह, संजय कुमार, राजीव यादव, अमित गुप्ता, सौरभ मिश्र, राम औतार सिह, प्रिय शर्मा, रेनू बहुखंडी, कु नेहा, अमिता रस्तोगी, शैलेन्द्र द्विवेदी, डॉ निधि त्रिपाठी, केशव शुक्ल, डॉ प्रियंका शर्मा, अखिलेश तिवारी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ अखिलेश तिवारी तथा आभार डॉ राहुल शुक्ल ने व्यक्त किया।

पर्यावरण दिवस पर केआर पेपर्स में हुआ पौधारोपण

लोक पहल

शाहजहाँपुर। विश्व पर्यावरण दिवस पर केआर पल्प एण्ड पेपर्स के फैक्ट्री परिसर में वृहद पौधारोपण अभियान चलाकर 500 पौधों का रोपण किया गया। इनमें तमाम तरह के फलदार पौधों के अलावा अशोक, नीम, पीपल आदि के पौधे भी रोपे गए। इस मौके पर कम्पनी के अध्यक्ष डीपी धीमान, अतुल गुप्ता, मुकेश गुप्ता आदि ने कम्पनी के अधिकारियों–कर्मचारियों के साथ पौधारोपण किया। इस मौके पर कम्पनी के उपमहाप्रबंधक सुरेन्द्र शर्मा ने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों से अपील की कि वे कम से कम वर्ष में एक पौधे का रोपण कर उसका संरक्षण अवश्य करें। कार्यक्रम को सफल बनाने में अशोक लोधी का विशेष योगदान रहा।

इस दौरान कम्पनी के तमाम अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

एसएस कालेज में छात्राओं ने पोस्टर बनाकर नशे के खिलाफकिया जागरूक

लोक पहल

शाहजहांपुर। एसएस कॉलेज में गृह विज्ञान विभाग में नशा विरोधी जागरूकता अभियान के तहत गृह विज्ञान की छात्राओं द्वारा पोस्टर चार्ट स्लोगन प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के सचिव डॉ0 अवनीश मिश्र, प्राचार्य डॉ राकेश कुमार आजाद एवं कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राजकीय महाविद्यालय काठ की गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ वंदना गुप्ता ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर तान्या शर्मा, द्वितीय निशा गुप्ता व तृतीय प्रांशी शर्मा ने प्राप्त किया तथा सांत्वना पुरस्कार प्राप्त करने वाली शिवांगी गुप्ता एवं दीपशिखा रही । निर्णायक के रूप में एसएस कॉलेज की बीएड. विभागाध्यक्ष डॉ मीना शर्मा एवं समाजशास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉक्टर पूनम रही। कला संकाय अध्यक्ष डॉ आलोक मिश्रा ने सभी छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की। सभी अतिथियों का स्वागत गृह विज्ञान की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ अंजू अग्निहोत्री ने किया, कार्यक्रम को सफल बनाने में डॉ नमिता शुक्ला, शिवांगी त्रिपाठी, प्रेरणा कश्यप विशेष सहयोग रहा। कार्यक्रम का संयोजन गृह विज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ विनीता राठौर ने किया।

मुमुक्षु शिक्षा संकुल में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया मुख्यमंत्री योगी का जन्मदिन काटा गया केक, रोपे गए 52 पौधे

लोक पहल

शाहजहांपुर। मुमुक्षु शिक्षा संकुल में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का 52 वां जन्म दिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस मौके पर 52 पाउंड का केक काटा गया और विश्व पर्यावरण दिवस पर 52 पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

स्वामी शुकदेवानंद सभागार में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मुमुक्षु शिक्षा संकुल के अधिष्ठाता व पूर्व केंद्रीय गृह राज्य मंत्री स्वामी चिन्मयानंद ने कहा कि पर्यावरण की दृष्टि से उत्तराखण्ड देश का सबसे बेहतर राज्य है वही के एक छोटे से गाँव में जन्म लेने वाले अजेय सिंह यानि योगी आदित्यनाथ ने विश्व मानचित्र पर अपने दृढ़ संकल्प, कार्य कुशलता, और फैसलों पर अडिग रहने वाले एक राष्ट्रवादी जननेता की छवि बनाई है। उनके शासन में जहाँ एक ओर गरीब, शोषित, वंचित को आत्मसम्मान के साथ जीने का अधिकार मिला है वही दूसरी ओर अपराधी, गुण्डे, माफिया अपनी जान की सलामती की दुआ कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विश्व पर्यावरण दिवस पर जन्म लेने वाले योगी आदित्यनाथ धीरे राजनीतिक और सामाजिक प्रदूषण को दूर कर रामराज्य की परिकल्पना को साकार करने के पथ पर अग्रसर हैं। एस एस कालेज के सचिव डा. अवनीश कुमार मिश्रा ने कहा कि योगी आदित्यनाथ और स्वामी चिन्मयानंद के रिश्ता काफी गहरा और निकट का है जिस तरह योगी आदित्यनाथ के गुरु महंत अवैद्यनाथ ने पूर्वांचल माफिया राज पर प्रहार किया ठीक उसी तरह स्वामी चिन्मयानंद ने जौनपुर और मछली शहर के सांसद और केंद्रीय मंत्री के रूप में गरीब, शोषित वंचित को सर उठा कर जीने का अधिकार दिलाने में कोई कसर नही छोड़ी। इस अवसर पर एस एस कालेज के प्राचार्य प्रो. आर. के. आजाद, विधि महाविद्यालय के प्राचार्य डा. जय शंकर ओझा, स्वामी धर्मानंद इंटर कालेज के प्रिंसपल डा. अमीर चंद्र, ईशपाल सिंह, अरविंद सिंह आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। डा. कविता भटनागर और छात्राओं ने बधाई गीत और वंदेमातरम गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डा. शिशिर शुक्ला ने किया। इस अवसर पर विशेष रूप से तैयार किये गए 52 पाउंड के केक को स्वामी चिन्मयानंद, डा. अवनीश मिश्रा, अरविंद सिंह आदि ने मिलकर काटा। अंत में सभी का आभार कार्यक्रम संयोजक डा. आलोक कुमार सिंह ने व्यक्त किया।इस अवसर पर डा.एच. सी मिश्रा, सुयश सिन्हा, सहित शिक्षक शिक्षिकायें और बड़ी संख्या में छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

खोखो प्रतियोगिता में एसएस कालेज बना विजेता

मिशन लाइफ के तहत खेल कूद प्रतियोगिता व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

लोक पहल

शाहजहांपुर। जिला गंगा समिति नमामि गंगे मिशन लाइफ योजना अन्तर्गत रोजा रेलवे मैदान में खेल कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में रेलवे कॉलोनी, स्वामी शुकदेवावंद महाविद्यालय, हथौड़ा बुजुर्ग, भावलखेड़ा आदि टीमों ने प्रतिभाग किया। 400 मीटर बालक वर्ग दौड़ में उदय प्रताप सिंह ने प्रथम, बिलाल खान ने द्वितीय व रचित भारती ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर बालिका वर्ग दौड़ में शिवानी ने प्रथम, दुर्गा ने द्वितीय व दिव्यांशी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वॉलीबॉल प्रतियोगिता में रोजा वॉली प्रथम विजेता व रोजा वॉली द्वितीय उपविजेता रही। खो खो प्रतियोगिता में एसएस कॉलेज की टीम

विजेता व हथौड़ा एफसी की टीम उप विजेता रही। रेफरी की भूमिका नफीस ने निभाई। इस मौके पर ग्लेरिंग पब्लिक स्कूल के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्रबंधक डॉ० आशुतोष शुक्ला, प्रांतीय अधिकारी गंगा समग्र राकेश कुमार पांडेय ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। कार्यक्रम संचालन विनय कुमार सक्सेना ने किया। अंत में सभी विजयी प्रतिभागियों को मंचासीन अतिथियों व क्षेत्रीय वनाधिकारी विकास प्रताप सिंह, आदित्य यादव द्वारा सम्मानित किया गया। इस मौके पर तेजपाल दिवाकर, रवि सक्सेना, अनमोल, नेहा, प्रभा, अतुल सिंह, राम सागर, सी पी शुक्ला, ऋषभ, सनद शुक्ला, आजाद, अनमोल, कामरान, लक्ष्य आदि उपस्थित रहे।

अभाविप ने विभिन्न स्थानों पर किया पौधारोपण

शाहजहांपुर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद शाहजहाँपुर महानगर के कार्यकर्ताओं ने शहर में विभिन्न स्थानों पर पौधारोपण किया। महानगर सह मंत्री वैभव सक्सेना ने बताया कि अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पेड़–पौधे लगाना बहुत जरूरी है। पेड़– पौधों के माध्यम से प्रकृति सभी प्राणियों पर अनंत उपकार करती है। पेड़–पौधे हमें छाया प्रदान करते हैं। फल–फूलों की प्राप्ति भी हमें पेड़–पौधों से ही होती है। पेड़–पौधों से हमें ऑक्सीजन की प्राप्ति होती है। इस दौरान महानगर मंत्री अनुज जाहोरी, महानगर मीडिया संयोजक आयुष श्रीवास्तव, आंदोलन प्रमुख अक्षय सक्सेना, अश्मित, वंश आदि रहे।

पर्यावरण की स्वच्छता हेतु अनिवार्य है स्वच्छ ऊर्जा

शिशिर शुक्ला, शाहजहांपुर

हाल ही में केंद्र सरकार के द्वारा आगामी पांच वर्षों तक नवीकरणीय ऊर्जा के महत्वपूर्ण विकल्पों सौर एवं पवन ऊर्जा से पचास हजार मेगावाट की अतिरिक्त विद्युत क्षमता के लिए निविदाएं आमंत्रित करने का फैसला किया गया है। वर्ष 2030 तक नवीकरणीय ऊर्जा से पांच लाख मेगावाट विद्युत उत्पादन का लक्ष्य भी रखा गया है। सरकार का यह निर्णय पर्यावरण के साथ–साथ ऊर्जा क्षमता की दृष्टि से भी नितांत महत्वपूर्ण है। शासन के द्वारा यह कदम उठाए जाने के पीछे एक कारण यह भी है कि विगत तीन वर्षों के दौरान नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र की उत्पादन क्षमता में महज 28 हजार मेगावाट की ही वृद्धि हुई है जोकि अपेक्षा से कम है। दरअसल जनसंख्या वृद्धि, वैश्विक तापन और पर्यावरण प्रदूषण की ज्वलंत समस्याएं आज वैश्विक स्तर पर व्याप्त हो चुकी हैं। जनसंख्या की तीव्र वृद्धि निश्चित रूप से ऊर्जा की आवश्यकता में वृद्धि को जन्म देती है। ऊर्जा के परंपरागत स्रोत पर्यावरण में प्रदूषण का जहर उगल रहे हैं। जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक प्रयोग का दुष्परिणाम हम में से किसी से भी छिपा नहीं है। ऐसी परिस्थितियों में स्वच्छ अथवा नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में वृद्धि करने पर विचार किया जाना अत्यावश्यक है।

ग्लोबल इलेक्ट्रिसिटी रिव्यू रिपोर्ट के अनुसार जी–20 समूह के देशों में ब्राजील स्वच्छ ऊर्जा के मामले में हिस्सेदारी का सर्वाधिक प्रतिशत रखता है। रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2022 के दौरान ब्राजील के द्वारा अपनी कुल ऊर्जा आवश्यकता का 89 प्रतिशत बिजली स्वच्छ अथवा नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से ही उत्पादित की गई। ब्राजील के द्वारा ऊर्जा आवश्यकता की पूर्ति हेतु जीवाश्म ईंधन का केवल 11प्रतिशत ही इस्तेमाल किया जाना निस्संदेह एक सराहनीय कदम है। रिपोर्ट यह भी कहती है कि 2022 तक जी–20 में शामिल 13 देश कुल विद्युत उत्पादन के 50 प्रतिशत अंश के लिए जीवाश्म ईंधन पर निर्भर थे। और तो और, सऊदी अरब में शत–प्रतिशत बिजली उत्पादन हेतु तेल व गैस का ही प्रयोग किया जाता है। बात यदि केवल सौर ऊर्जा की करें, तो भारत में सौर ऊर्जा का उत्पादन ब्राजील से 5 प्रतिशत ज्यादा दर्ज किया गया है। इतना ही नहीं, सौर ऊर्जा उत्पादन को लेकर भारत में रिकॉर्ड बढ़ोतरी भी दर्ज की गई है। 12 दिसंबर 2015 को अपनाए गए पेरिस जलवायु समझौते के प्रमुख लक्ष्यों में वैश्विक तापन पर नियंत्रण करना, ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करना एवं जलवायु परिवर्तन पर लगाम लगाना शामिल था। निस्संदेह इस समझौते के प्रभावी होने के बाद सौर और पवन ऊर्जा जैसे स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों के उपयोग में वृद्धि के कारण कोयले के उपयोग में कमी आई है। किंतु रिपोर्ट के अनुसार अनवीकरणीय ऊर्जा से नवीकरणीय ऊर्जा में परिवर्तन की दर अभी धीमी है एवं इस दर से वैश्विक तापन में वृद्धि को डेढ़ डिग्री सेल्सियस तक सीमित कर पाना मुश्किल है। किंतु यह एक सकारात्मक एवं संतोषजनक तथ्य है कि वर्ष 2015 में जी–20 देशों में कोयले से बनने वाली बिजली की जो हिस्सेदारी 43 प्रतिशत थी, वर्ष 2022 में 39 प्रतिशत पर पहुंच गई है। यद्यपि बहुत से देश ऐसे भी हैं यहां 2022 में कोयले का उपयोग कम करने के लक्ष्य के बावजूद भी नवीन कोयला संयंत्र स्थापित किए गए एवं साथ ही साथ नई कोयला परियोजनाओं की भी घोषणा की गई। चीन के द्वारा 100 गीगावाट की नई कोयला बिजली परियोजनाओं को मंजूरी दिया जाना निश्चित रूप से एक विश्वासघाती कदम है।

जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता खत्म करना कोई बहुत मुश्किल कार्य नहीं है। सूर्य के रूप में ऊर्जा का एक अथाह भंडार प्रकृति ने हम सबको दिया है। सौर ऊर्जा को विद्युत ऊर्जा में परिवर्तित करने की तकनीक भी पूर्णतया विकसित हो चुकी है। ऐसी स्थिति में वैश्विक स्तर पर घरेलू से लेकर औद्योगिक क्षेत्र में सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। सरकार के द्वारा सौर एवं पवन ऊर्जा से प्रतिवर्ष पचास हजार मेगावाट अतिरिक्त विद्युत उत्पादन क्षमता बढ़ाने का निर्णय निश्चित रूप से एक सराहनीय एवं जागरूकतापूर्ण कदम है। एक दूसरे दृष्टिकोण से देखा जाए तो जीवाश्म ईंधन के भंडार सीमित हैं, जो एक न एक दिन निश्चित रूप से समाप्त हो जाएंगे। लिहाजा वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का पता लगाया जाना एवं उसका प्रयोग करके अपनी आवश्यक ऊर्जा क्षमता को पूरा करना संपूर्ण विश्व की जिम्मेदारी है। सूर्य व पवन ऊर्जा के ऐसे स्रोत हैं जिनसे पर्यावरण को किसी तरह की कोई क्षति नहीं होती। साथ ही साथ ये अनंत काल तक विद्यमान रहने वाले ऊर्जास्रोत हैं। आज विश्व के समक्ष जो सबसे बड़ी चुनौती है, वह है पृथ्वी को ग्लोबल वार्मिंग, पर्यावरण असंतुलन तथा प्रदूषण से बचाने की। यह तभी संभव है जब हम परंपरागत ऊर्जा स्रोतों को भूलकर स्वच्छ एवं नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों पर निर्भर हों। वर्ष 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने हेतु स्वच्छ ऊर्जा के विकास हेतु सक्रिय कदम उठाया जाना नितांत आवश्यक है।

विकास में हर समुदाय की पूरी भागीदारी हो: इकबाल सिंह लालपुरा

अल्पसंख्यक आयोग के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने धर्मगुरूओं के साथ की बैठक

लोक पहल

शाहजहाँपुर। राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष इकबाल सिंह लालपुरा की अध्यक्षता में विकास भवन सभागार में सभी अल्पसंख्यक समुदायों के धर्मगुरूओं के साथ बैठक सम्पन्न हुयी। बैठक के दौरान अल्पसंख्यक समुदायों के लिये संचालित योजनाओं, कार्यक्रमों तथा उनके शैक्षिक उत्थान एवं सामाजिक सुरक्षा के विषय में विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी तथा अल्पसंख्यक समुदायों से सम्बन्धित बताये गये प्रकरणों पर शीघ्र कार्यवाही के लिए अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष ने निर्देश दिये। बैठक में अल्पसंख्यक आयोग के राष्ट्रीय अध्यक्ष इकबाल सिंह लालपुरा ने कहा कि हर भारतीय को अच्छी शिक्षा मिले, विकास में सभी पूरी तरह से भगीदार रहे तथा समाज के अंतिम पायदान पर स्थित व्यक्ति को भी योजनाओं का पूरा लाभ मिले इसके लिये केन्द्र एवं राज्य दोनो सरकार प्रयासरत है। उन्होने निर्देश दिये कि अल्पसंख्यकों के हितार्थ संचालित योजनाओं का व्यापक प्रचार प्रसार कराया जाये। उन्होने एकता एवं भाईचारे के साथ देश और समाज को आगे बढ़ाने के लिये प्रेरित करते हुये कहा कि यदि कोई गुमराह करने की कोशिश करे तो कदापि गुमराह न हो तथा सच को जरूर जाने। उन्होने कहा कि विश्व पटल पर भी भारत का सम्मान बढ़ा है। उन्होने सभी को प्रेरित करते हुये कहा कि कोई भी जरूरतमंद बच्चा धनाभाव के कारण शिक्षा से वंचित न रहे इसके लिये सभी को प्रयासरत रहना चाहिए। बैठक के दौरान जिलाधिकारी उमेश प्रताप सिंह ने आश्वस्त किया कि उनके द्वारा दिये गये निर्देशों का अक्षरशः अनुपालन सुनिश्चित कराया जायेगा। उन्होने कहा अल्पसंख्यक समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ प्रत्येक तीन माह में बैठक आयोजित कर उनकी समस्याओं को सुनकर प्रभावी निस्तारण सुनिश्चित कराया जायेगा।

जिलाधिकारी ने कहा कि अल्पसंख्यकों के हितार्थ संचालित योजनाओं का भी व्यापक प्रचार प्रसार सुनिश्चित कराया जायेगा। बैठक के दौरान पुलिस अधीक्षक एस. आनन्द, जिला विकास अधिकारी पवन कुमार सिंह सम्बन्धित अधिकारी एवं धर्मगुरू उपस्थित रहे।

महापौर अचर्ना वर्मा ने की सफाई व्यवस्था की समीक्षा, करेंगी वार्डो का निरीक्षण

लोक पहल

शाहजहांपुर। नगर वासियों को बेहतर सफाई व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए नवनिर्वाचित महापौर अर्चना वर्मा ने निगम कार्यालय में बैठक कर समीक्षा की। बैठक में महापौर ने नगर क्षेत्र में प्रतिदिन नगर निगम टीम द्वारा की जाने वाली सफाई की स्थिति की जानकारी ली। इस मौके पर समस्त सफाई नायकों द्वारा अपने–अपने क्षेत्रों में प्रतिदिन कराई जाने वाली सफाई की स्थिति के विषय में विस्तारपूवर्क अवगत कराया। इसके उपरान्त महापौर द्वारा नगरवासियों के स्वास्थ्य से सम्बन्धित सुविधाओं को ध्यान में रखते हुये नगर क्षेत्र में साफ–सफाई के कार्य को व्यवस्थित रुप से कराये जाने तथा नियमित रुप से कराये जाने वाले सफाई कार्य को माइक्रो प्लान बनाकर कराये जाने के निर्देश दिये। सफाई व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए मेयर अर्चना वर्मा ने कहा कि वे प्रतिदिन किसी एक वार्ड का निरीक्षण कर सफाई व्यवस्था का जायजा लेंगी। उन्होंने नगर क्षेत्र में स्थित समस्त नालों की सफाई का कार्य बरसात से पूर्व कराने के निर्देश दिए। समीक्षा बैठक में अपर नगर आयुक्त एस.के. सिंह, सहायक नगर आयुक्त रश्मि भारती, महाप्रबंधक जल सौरभ श्रीवास्तव, मुख्य कर निधार्रण अधिकारी राकेश कुमार सोनकर, डिस्ट्रिक्ट कोडिर्नेटर विनय प्रताप सिंह, समस्त सफाई एवं खाद्य निरीक्षक, समस्त सफाई नायक व सहायक सफाई नायक उपस्थित रहें।

युवा महोत्सव में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

सांसद अरूण सागर ने विजयी प्रतिभागियों को किया पुरस्कृत

लोक पहल

शाहजहांपुर। नेहरू युवा केन्द्र द्वारा डॉ. सुदामा प्रसाद विद्यास्थली में जिला युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि सांसद अरुण कुमार सागर ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर किया साथ ही विभिन्न सरकारी विभागों व स्वयं सेवी संस्थानों द्वारा युवाओं के हितार्थ चल रही योजनाओं की प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया।

जिला युवा अधिकारी शिवम शर्मा ने बताया कि युवा महोत्सव के दौरान चित्रकला प्रतियोगिता, मोबाइल फोटोग्राफी, कविता लेखन व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम अंतर्गत प्रथम स्थान हरि ग्रुप ने प्राप्त किया, द्वितीय स्थान नटराज डांस व तृतीय स्थान ब्लैक पैंथर की टीम रही। जिन्हें नकद धनराशि देकर पुरस्कृत किया गया। चित्रकला प्रतियोगिता अंतर्गत प्रथम स्थान ऋषभ, द्वितीय स्थान केसर व तृतीय स्थान अभिषेक ने प्राप्त किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि सांसद अरूण सागर ने जनपद में युवाओं के हितार्थ भारत सरकार व राज्य सरकार के द्वारा चलाये जा रहे कार्यक्रमों को युवाओं तक पहुंचाने का आवाहन किया। विशिष्ट अतिथि भाजपा जिला अध्यक्ष केसी मिश्रा ने युवाओं को राष्ट्र निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाने की अपील की।

कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा महिला एवम बाल कल्याण विभाग, व्यवयासिक प्रशिक्षण केंद्र तिलहर व बंडा, नमामि गंगे, नेहरू युवा मंडल अकर्रा रसूलपुर, स्वच्छ भारत मिशन, आयुर्वेद चिकित्सा, स्वास्थ्य विभाग, श्री बालाजी स्वयं सहायता समूह, जिला आर्चरी एसोसिएशन आदि की प्रदर्शनी भी लगाई गइ। कार्यक्रम में ओमकार मनीषी, डॉ० रानू, अनीता त्रिवेदी, अभिषेक सक्सेना, इंदु बाला, सोनम सचान, विनय कुमार सक्सेना, डॉ रूपक श्रीवास्तव, आशीष, पुनीत, रवि, हिमांशु आदि मौजूद रहे तथा संचालन सर्वेश वर्मा ने किया।

पूर्व एमएलसी जयेश प्रसाद ने किया अखिलेश यादव स्वागत

लोक पहल

शाहजहाँपुर। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव जनपद लखीमपुर खीरी में दुधवा नेशनल पार्क गये थे। जहां से उनका काफिला लखनऊ वापस लौट रहा था तभी रास्ते में पलिया शारदा नदी के पुल के पास पूर्व एमएलसी जयेश प्रसाद व उनके पुत्र जाग्रत प्रसाद, जयादित्य प्रसाद उनके भतीजे जयदेव प्रसाद ने अपने दर्जनों समर्थकों के साथ उनका माला पहनाकर भव्य स्वागत किया। पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने गाड़ी से नीचे उतरकर जयेश प्रसाद को गले लगाकर उनका कुशलक्षेम पूछा एवं वहां मौजूद कार्यकर्ताओं से कहा सभी लोग एकजुट होकर आने वाले चुनाव में जोर शोर से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों को चुनाव लड़वाये और जीताकर संसद भवन भेजें।

सभी कार्यकर्ता कंधे से कंधा मिलाकर समाजवादी पार्टी के प्रत्याशियों को जिताये। इस अवसर पर गोपाल अग्निहोत्री, राकेश मिश्रा, अवनीश मिश्रा, आशीष सिंह उर्फ डब्बू भैया, शिव कुमार मिश्रा, मायाराम शुक्ला बरगदिया, राम हरीश बाजपेई, भैयालाल, काजल सिंह, देवेंद्र सिंह, अमन सिंह, हसीब, कमर हुसैन, असलम, महमूद, आशीष दीक्षित एडवोकेट, अभिषेक शुक्ला, प्रदीप शुक्ला उर्फ सोनू, प्रेम मिश्रा, मुकेश मिश्रा, पूर्व प्रधान बृजेश मिश्रा सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

एसएस कॉलेज में 'एक छात्र एक पौधा' का दिया गया लक्ष्य

लोक पहल

शाहजहांपुर। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। मानव और पर्यावरण एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। मानव शरीर और स्वास्थ्य पर पर्यावरण का सीधा प्रभाव पड़ता है। अतः पर्यावरण को मानव के अनुकूल बनाए रखने के लिए पूरे विश्व में 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। यह विचार एसएस कॉलेज के डी. एल.एड विभाग के प्रभारी डॉ मनोज कुमार मिश्र ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर डीएलएड प्रशिक्षुओं द्वारा किए गए वृक्षारोपण के समय व्यक्त किए। डॉ मिश्रा ने प्रशिक्षुओं को एक प्रशिक्षु एक पौधा लगाने का लक्ष्य दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रशिक्षु अपने अपने घर में या घर के निकट कहीं भी एक पौधा अवश्य लगाएं।

पौधारोपण के पश्चात डीएलएड विभाग द्वारा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जन्मदिन के उपलक्ष में एक निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें डीएलएड प्रशिक्षु अर्चिता वर्मा ने प्रथम स्थान प्रिया गुप्ता एवं संज्ञा मिश्रा द्वितीय स्थान पर रही तथा प्रियंका कश्यप एवं मुकुल कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में अमिता रस्तोगी एवं शैलेंद्र द्विवेदी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से शिवानी भारद्वाज, रचना रस्तोगी, नीरज गुप्ता, सर्वोत्तम शर्मा, एवं जय सिंह का विशेष सहयोग रहा। अंत में कार्यक्रम संयोजक अभिषेक बाजपेई ने आभार व्यक्त किया।

विश्व पर्यावरण पर 'उपज' ने किया पौधारोपण

लोक पहल

शाहजहांपुर। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर वन विभाग एवं उपज संगठन की ओर से संत गाडगे पार्क में पौधारोपण किया गया। इस मौके पर उ.प्र. एसोसिएशन ऑफ जर्नलिस्ट के जिलाध्यक्ष अनिल मिश्रा, भाजपा महानगर उपाध्यक्ष श्यामबाबू दीक्षित, कोषाध्यक्ष जितेंद्र वर्मा, रमेश यादव, भाजपा किसान मोर्चा के मीडिया प्रभारी सर्वेश मिश्रा, गोविंद अवस्थी, शुभम श्रीवास्तव, मयंक वर्मा, राहुल अवस्थी, आदर्श मिश्रा, योगेश त्रिवेदी, डिप्टी रेंजर लोकेंद्र प्रताप सिंह, वन दरोगा सुशील कुमार आदि ने कुल 25 पौधे रोपे। सभी ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली। इस मौके पर डिप्टी रेंजर लोकेंद्र प्रताप ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए वन विभाग की ओर से जनपद में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। हम सभी का उद्देश्य पौधारोपण के साथ–साथ उन्हें संरक्षित रखना भी होना चाहिए। महानगर उपाध्यक्ष श्यामबाबू दीक्षित ने कहा कि सभी को प्रतिवर्ष कम से कम 20 पौधे लगाना चाहिए।

लोक पहल, राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक, मुमुक्षु आश्रम, शाहजहॉपुर, प्रधान संपादक अरूण पाराशरी

लोक पहल हिन्दी साप्ताहिक स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. अवनीश कुमार मिश्रा द्वारा शाहजहॉपुर प्रिन्टर्स जज साहब वाली गली, तारीन बहादुरगंज जिला शाहजहॉपुर 242001 से मुद्रित व 160 रोशनगंज लक्ष्मी राईस मिल, शाहजहॉपुर 242001 उ0प्र से प्रकाशित। संपादक–सुयश सिन्हा मो. 9935740205 E-mail : lokpahalspn@gmail.com समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र शाहजहॉपुर होगा।